ओमशान्ति मीडिया

'25 अगस्त' स्मृति दिवस विशेषांक

वर्ष - 15 अंक-10 अगस्त-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

समस्त मानवजाति को गौरवान्वित करती एक दिव्यआत्मा

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, रूपी नारे को आत्मासात कर सभी को इस पथ पर अग्रसर करने वाली एक ऐसी दिव्य आत्मा जिसकी अलौकिक दिव्य ज्योति के प्रकाश ने सभी को सत्य मार्ग पर लाकर जीवन की अन्यान्य संभावनाओं के द्वार खोले। सभी को संदेश में अपने दिव्य प्रकाश को बढ़ाने तथा निर्बाध गति से आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली महा तपस्विनी जिनके प्रकम्पन से आज भी दुनिया प्रकम्पित हो रही है और जन-जन से एक ही प्रेरणा आ रही कि एक आप ही हमारे पालनहार हो। इस पालनहार की पालना का मूल्य चुकाने हेतु संस्था 25 अगस्त के दिन को 'विश्व बंधुत्व दिवस' के रुप में मनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा है। ऐसे पालनहार को हम सभी आत्माओं का शत् शत् अभिवादन अभिनंदन....

भारत अध्यात्म-प्रधान देश है। इसके कण-कण में अध्यात्म की उज्जवल ज्योति बिखरती है। यहाँ की भूमि मानवीय विशेषताओं की रत्नगर्भा है। समय-समय पर विविधानेक भव्यात्माओं ने जन्म लेकर जीवन को सफल सार्थक तो किया ही है, उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले अनन्य व्यक्तियों के जीवन को भी आलोकित किया है। उन्हें सत्य का रास्ता दिखाकर मानव जीवन की दुर्भावनाओं से परिचित कराया है। जिस प्रकार गुलाब का फूल कांटों में जनमता है। आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन भी कांटों के बीच खिला गुलाब है। गुलाब का काम है सुगंध फैलाना। गुलाब कांटो को अपने जीवन की बाधा नहीं मानता। वह कांटों के बारे में कुछ भी सोचता विचारता नहीं है।

गुलाब सदैव उर्ध्वमुखी होता है। वह ऊपर ही बढ़ता है। गुलाब को आपने देखा होगा, गुलाब कभी अधोमुखी नहीं होता है। आध्यात्मिक व्यक्ति भी उर्ध्वमुखी होता है। कांटे उपसर्गों और विशेषताओं के बीच से अपना पथ चुनते हैं। सौंदर्य और सुगंध उसका वैभव होता है। कोई उसे हार्दिकता से देखे-समझे या न देखे-समझे, उसका काम है अपनी विशेषताओं से विकसित होते रहना। आध्यात्मिकता, सौम्यता और भव्यता से भरा हुआ प्रकाश स्तंभ होता है। ऐसे सर्वांगीण सम्पन्न ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि तेजस्वी युगरत्न थीं। उनमें अलौकिक दिव्य ज्योति की अमर शिखा प्रज्वलित दिखाई देती थी। उन्होंने..-शेष पेज- 3 पर..

रोशनी फैलाता एक प्रकाशपुंज

''एक प्रकाश पुंज है, एक प्रकाश की मणि।
दोनों मिल के आज भी दे रहे हैं रोशनी।।''

समाज की सेवा में दरअसल स्वयं का ही तो विस्तार है। अध्यात्म में स्वयं की सेवा का अर्थ स्वयं के स्वरूप से अच्छी तरह परिचित होकर अपने विकर्मों से मुक्ति पाना है। यही कार्य दादी प्रकाशमणि जी का था, जो कहा करती थी कि आप स्व-सेवा करो तो अपने आप ही विश्व सेवा हो जायेगी। उदाहराणार्थ उनसे एक बार पूछा गया कि दादी जी आप खुद की उन्नति के लिए कौन सा पुरुषार्थ करती हैं, दादी जी कहते कि मैं खुद का खुद से साक्षात्कार करती हूं अर्थात् आत्मा रूपी मणि को मैं अपनी हथेली पर रखती हूं तथा देखती हूं कि उसके किस छोर पर दाग है, अर्थात् किससे रोशनी ठीक से बाहर नहीं जा रही है उस पर मैं कार्य करती थी। मैं पूरे विश्व को अपना मानती हूं तथा उसके लिए अपने किसी भी भाई-बहन के लिए मेरे अन्दर कोई ऐसे भाव नहीं हैं ना जिससे उसे ये लगने लगे कि शायद दादी जी मेरे लिए ऐसा नहीं सोंचती हैं जैसा सभी के लिए। इसलिए ही शायद उनकी झिड़की, उलाहना, आदेश व अनुदेश में लोगों को मिठास का अनुभव होता रहा। ऐसे हज़ारों ब्राह्मण वत्स हैं जिनके अनुभव में यह बात है कि दादी जी सदा उन्हें मीठी पालना देती रहीं। दादी जी हमेशा ही सबकी संभाल अपने ज्ञान-योग द्वारा करती थी।

- ब्र. कु. गंगाधर

शायद इन्हीं सारी बातों को लेकर प्रकाश पुंज शिव बाबा ने अपने रथ द्वारा यही प्रेरणा दी कि आप परमात्म कार्य की उन सभी जिम्मेवारियों को निभाओ जो बाबा उनके रथ द्वारा किया करते थे। ज्ञान में विशेष रुचि रखने वाली दादी जी ने इस विशेषता को समाज के सभी वर्गों के लिए अपनाया। सभी वर्ग के श्री मुख से यही बात प्रस्फुटित होती रही कि जैसे दुनिया में अन्य धर्म-अध्यात्म हैं वैसे यह स्वयं-केन्द्रित नहीं है, यह एक विश्वव्यापी अभियान है, जिसे हमें भी करना चाहिए, चलिए अगर कर नहीं सकते तो सहयोग तो दे ही सकते हैं। शांति, अहिंसा, सदभाव तथा सहयोग की प्रतिनिधि संस्था के रूप में मान्यता भी दादी जी के मणि के द्वारा ही हो पाया। सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने आकर एक मंच पर समाज के संस्कार व संसार परिवर्तन की बातें भी रखीं तथा यह भी कहा कि आप हमें कोई सेवा बताएं तो हमें बड़ा ही सौभाग्य का अनुभव होगा।

चलो मैं यह नहीं कहता कि दादी जी ने एक ही दिन में अपने अंदर वह सारी विशेषताएं ला दी, परंतु मैं ये कहता हूं कि उन सभी गुणों पर बार-बार चिन्तन-मंथन करती थीं दादी जी।

इसलिए ही शायद लौकिक दृष्टि में प्रबंधन, पालना और विस्तार के कार्य के लिए ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि को ही चुना। उस प्रकाश की हल्की व प्यारी सी आंच में सभी अपने मन की चोटों को सेकने की कोशिश करते रहते हैं। सभी जैसे ही उस प्रकाश स्तंभ के आसपास खड़े होते हैं तो सभी के मन में दादी जी के प्रति कोई न कोई भाव उत्पन्न अवश्य होते हैं। सभी उस विश्व ग्लोब का चित्र देखते तथा उस पर मणि का प्रकाश फैलता हुआ अनुभव करते हैं। उस प्रकाश की आभा ऐसे बहुत से भक्तों के हृदयों को स्पंदित करती, झंकृत करती और वो भी कहते कि क्या बात है, क्या थी आपकी दादी जी। उनमें एक तरह से अपनापन ही तो है, जो सभी लोग अपनी मत रखते रहते हैं।

जैसे शिव-परमात्मा की मंशा से ज्ञान-कलष माताओं के सिर पर रखा गया, उसी में से ही जगत-माता के रूप में दादी जी थी जिन्होंने अपने प्रकाश से सभी के मन रूपी क्यारी को सींचा। विस्तारित रूप से अगर हमें कहना है तो बहुत कुछ कहा जा सकता है लेकिन देदीप्यमान प्रकाश को लिया जाये जिससे आज जग प्रकाशित होता है, उसने अपने में से थोड़ी रोशनी निकाल कर एक मणि को प्रदान किया। उस मणि ने अपने प्रकाश से अन्य मणियों को थोड़ी-थोड़ी रोशनी देनी शुरु की। आज सभी मणियां प्रकाशित हैं उस प्रकाश से जो आज न होते हुए भी हर जगह मौजूद हैं। उसकी आहट सभी के पास पहुँचती है, सभी उसे देखते भी हैं, परंतु उसके अनुभव को अपना अनुभव बनाना सभी के बस की बात नहीं। निमित्त व निर्माण भाव की अनुपम देवी के रूप में उन्होंने अपना जीवन सभी के सामने अनुकरणीय रूप में रखा।

कहा भी जाता है कि इस संसार में कार्य तो सभी करते हैं, लेकिन कुछ लोग सभी के लिए एक मिसाल छोड़ जाते हैं, आप उसे देखें तो उदाहरण स्वरूप ही देखें। मगर क्या कहें उनके बारे में जिसे सारी दुनिया ही नतमस्तक होकर चरण वंदन करती, उनके मुख कमल से निकली बातों को धारण भी करते एवं धारणा कराने को आतुर भी रहते।

जहाँ पहुँची आवाज़ वहाँ हुआ सेवा का आगाज़

दादी प्रकाशमणि को मैं पचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यर पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

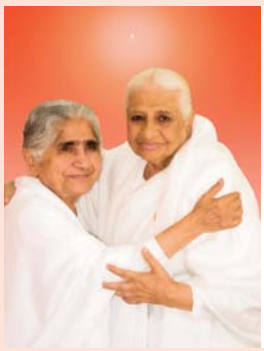

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों मं आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परन्तु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीच अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई। देखते ही देखते आज हमारे सामने ग्लोब पर बाबा का परचम लहराया।

साकार बाबा का स्नेही 'आकार' लिया दादीने

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही हैं। अत: हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर के नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत इस प्रकार, सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।

समकालीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी, दादी जी से आशीर्वाद लेते हुए।

राजस्थान के राज्यपाल डा.एम.चन्नारेडी दादी जी को डाक्टरेक्ट डिग्री से सम्मानित करते हुए।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी का शाल ओढ़कर अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

यू.पी.ए.अध्यक्षा सोनिया गांधी के माउण्ट आबू प्रवास अभिवादन करते हुए दादीजी।

समस्त मानवजाति...

14 वर्ष की उम्र में ही आध्यात्मिक पथ पर अपने को अग्रसित कर दिया था। उनके जीवन में रुकावटें और बाधाओं के पहाड़ आए, पर वे हिमालय की तरह अडिग अपने साधना पथ पर आगे बढ़ती रहीं। कहते हैं हिमालय कभी किसी झंझावात की परवाह नहीं करता। जैसे जंगल का स्वामी एक ही सिंह होता है वैसे ही सिंह की भांति कांटो रुपी जंगल की स्वामिनी दादी जी ने समस्त मानव जाति में आध्यात्मिकता की अलख जगाई।

आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन एक चमत्कार होता है। उनका जन्म तो एक साधारण मनुष्य की तरह ही होता है, पर जीते हैं वह एक असाधारण मनुष्य की तरह। जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है, किन्तु जिस जीवन से देश और समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता है।

भारतीय संस्कृति का प्राण आध्यात्मिकता।

इन्हीं आध्यात्मिक परंपराओं को चरितार्थ किया है दादीजी ने। जिनके कुशल नेतृत्व में संघ व समाज में नए चरण पड़े हैं। जिनके शासन प्रभाव के अनगिनत कार्य संपन्न हो रहे हैं। जिनके उदात्त, महान आदर्श से समस्त मानव जाति गौरवान्वित हो रही है, जिन्हें पाकर हम धन्य हुए। उनका जन्म सिन्ध प्रांत में हुआ। केवल 14 वर्ष की आयु में वे प्रजापिता ब्रह्मा के सम्पर्क में आईं और उन्होंने अपना जीवन विश्व के मानव के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने जीवन-पर्यन्त स्थूल-सूक्ष्म से हर क्षण को विश्व सेवा अर्थ व्यतीत किया। दादीजी के सम्पर्क में चाहे किसी को एक पल या एक घण्टा या कुछ दिन रहने का अवसर मिला, वे क्षण उनके जीवन भर के लिए यादगार बन गए। दादीजी की दृष्टि, उनका यज्ञ के प्रति समर्पण भाव व विश्वकल्याण का कार्य उन्हें आजीवन प्रेरित करती रहेंगी।

चाहे कोई किसी भी मजहब, जाति-पाति या लिंग का हो, दादीजी हरेक की खूबियों को भी जानती थीं और उन्हें रुहानियत की खुशबू से भर देती थीं। उनमें उमंग-उत्साह का संचार हो जाता था, वे सदा के लिए यज्ञ-रक्षक बन कार्य करने को प्रेरित हो जाते थे। जो भी दादी के साथ एक पल भी बिता पाता, वह उनसे कुछ न कुछ ज़रूर सीखता। हमारे दिलो-दिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता परन्तु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से यादकर आँसू बहाना या भावुक हो जाना, क्या इससे दादी जी खुश होंगी? या फिर दादी जी के गुणों को और कर्तव्यों को, उनकी उम्मीदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होंगी?

इस बार हम उनका सातवां अव्यक्त दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अ-पनी अंतरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है? अगर हाँ, तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियां याद होंगी। दादी जी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुई सर्व शिक्षाएं, फिल्म रील की तरह एक-एक कर अन्तर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं और हमारी यादों के बगीचे के फूलों को नई सुन्दरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में दिखती हैं।

दादी जी - असामान्यता में सामान्यता

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है परंतु दादी जी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इन्सानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम दे-खते हैं तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नज़र शायद न गई हो, लेकिन इस बात पर अगर हम गौर करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। सर्दी हो या बारिश, हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं।यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा है। दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई बाहर का श्रमिक सेवाधारी, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर दादी जी की नज़र पड़ती थी और खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थीं। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाली निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद अभी-अभी आई हुई कुमारियों को सखीपन का अनुभव वह बड़ी ही सहजता से करा देती थीं। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात कर लेती थीं कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वालों को भी वह स्वत: आत्मसात हो जाती थी। 70 वर्ष से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताज़ा देखा गया।

और हाँ, किसी की नज़र तीक्ष्ण हो तो उनके अंदर छिपे हुए इनोसेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चाँद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आस-पास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुशबू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही हैं।

हरेक के अंदर छिपे हुए गुणों को परखकर उनके उस गुण या कला को बाबा की सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखा जा सकता है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थीं बल्कि कद्र भी करती थीं और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थीं। जीवन के अंतिम दिनों में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं, लेकिन उनकी नज़रों में हमें पहचानने के चिन्ह अवश्य दिखाई देते थे। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हज़ारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अंतिम श्वास तक अपना हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रका-शमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। उनके जीवन और जज़्बे को हमारा शत् शत् प्रणाम श्रद्धांजली।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

दक्षिण आफ्रिका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडु को ईश्वरीय सौगात के रूप स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

स्वामी गंगाधर को शाल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए दादी प्रकाशमणि।

भावी नई दुनिया...

पेज 12 का शेष..

रीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि तथा अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर अपना सबकुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं को एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश स्तम्भ बन कर उभरीं।

द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में शिरकत की

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हज़ारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया।

विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं में अग्रिम भूमिका।

दादी की दिव्य बुद्धि, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सद्प्रयास से दिल्ली, मुम्बई, अमृतसर, कानपुर, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की निदेशिका के रूप में दादी ने सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किये, जिससे लाखों आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से लाभ मिला।

1964 में इन्हें महाराष्ट्र ज़ोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक ज़ोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर दादी के हाथों में।

1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादीजी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादीजी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्व-शक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक वह संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं। अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर उच्च जीवन शैली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादीजी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई कि जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेशों में साढ़े आठ हज़ार ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए और हज़ारों भाई-बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ नें उनके सान्धिय में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की

दादी जी के नेतृत्व में समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा।

''दादी जी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी नवाजा गया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी पुरस्कार प्रदान किये । इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, समाजिक संस्थानों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की ''।

'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से नवाजा।

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर,1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ एम.चेन्ना रेड्डी ने 'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार - 1994' भेंट किया ।

सोलह विभिन्न वर्गो का गठन

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सलाह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बंधुत्व का बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। ज्ञान-योग की तर्कसंगत वैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुति बुद्धिजीवियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। दादी जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, व्यसन एवं तनाव से मुक्ति के लिए अनेक अभियान चलाए। युवाओं व महिलाओं के उत्थान, सर्वांगीण ग्राम विकास के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने वाले असंख्य कार्यक्रमों का संयोजन किया।

आध्यात्मिक विभूति का मोरमुकुट दादी के सिर पर

दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और महामण्डलेश्वरों ने दादी जी को आमंत्रित करके उनके उद्बोधन से लाखों लोगों को लाभान्वित करवाया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें राजस्थान के राज्यपाल डॉ एम.चेन्ना रेड्डी, महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.सुब्रमणियम, आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू, दिल्ली के मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा, ओडिशा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक, जानकी वल्लभ पटनायक, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल विरेन शाह आदि उल्लेखनीय हैं। महाराष्ट्र, असम, ओडिशा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे अनेक राज्यों में दादी जी को वरिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया।

'विश्व धर्म संसद'की मनोनीत अध्यक्षा

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयीं, उस समय वाशिंगटन डी.सी.में स्टेट कैपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के कर कमलों से वृक्षारोपण कर 'ओमशान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

विशेष आवार्ड से सम्मानित

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष आवार्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादी जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी सर्व धर्म सम्मेलन, नारी सम्मेलन एवं युवा यात्राओं का आयोजन उन्हीं की प्रेरणा का परिचायक था।

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत्-शत् नमन।

पूर्व महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभादेवी सिंह पाटिल दादी प्रकाशमणि से आर्शावाद प्राप्त करते हुए।

दीप प्रज्जवल कर संत सम्मेन का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणिजी।

सिरोही के राजा रधुवीर सिह को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी अभिनंदित करती दादी प्रकाशमणि।

पूर्व प्रधामंत्री एन आर राव दादी के साथ दीप्रज्जवलन कर समेलन का उद्घाटन करते हुए साथ में पूर्व राजस्थान के गवरनर चंना रेड्डी।

कर्नाटक के स्वामीजी दादीजी का पुष्पाहार पहनाकर समानित करते हुए।

सबके मन के मर्ज का इलाज दादी के पास था

ब्र.कु.डॉ.सविता,मधुबन।

दादी क्लास से आती थी तो उन्हें लाने की सेवा पहले एक बहन करती थी, बाद में मुन्नी बहनजी ने मुझे ये सेवा करने का भाग्य दिया। क्लास के बाद नाश्ते तक उनके साथ रहने से दादी के बारे में काफी कुछ जानने को मिला। दादी क्लास के बाद सीधे नाश्ते पर न जाकर सभी डिपार्टमेंट्स में जाकर देखती थीं और वहाँ का हालचाल लेती थीं। कारोबार से जुड़े कई कार्य दादी नाश्ते से पहले ही कर लेती थीं। दादी से कोई भी कभी भी आसानी से जाकर मिल सकता था और अपनी समस्याओं को उनके सामने रख सकता था। दादी को उस समय खांसी बहुत हुआ करती थी, इस कारण डॉ. होने के नाते रात को मेरी सेवा उनके पास रहती थी। मैं देखती थी कि दादी जब बेड पर आती थीं, तो मुरली पढ़े बिना कभी भी नहीं सोती थीं, चाहे कितनी भी देर हुई हो लेकिन मुरली बिना पढ़े दादी कभी सोई नहीं। अमृतवेला भी दादी ने कभी मिस नहीं किया भले कितनी ही देर रात को सोई हों। एक बार मैंने दादी से यूं ही पूछ लिया कि दादी यहां सब अलग से स्पेशल बैठ कर योग करते हैं, आप अमृतवेला तो करते हैं लेकिन अलग से योग में क्यों नहीं बैठते, फिर आप कब याद करते है? तो दादी ने मुझे जवाब दिया कि मैंने बाबा को भूला ही कब है जो मुझे याद करना पड़े। ये बात मेरे दिल को छू गई थी। मैं कई बार रात भर दादी के साथ रही हूँ, उनके साथ सोई भी हूँ, तो मैंने देखा है कि दादी बेड पर जाकर मुरली पढ़ती थीं और एक मिनट में सो जाती थीं। कैसा भी समय हो, परिस्थिति हो लेकिन उनकी स्थिति पर असर आए ऐसा कभी नहीं हुआ। दादी एक बार राजस्थान के इंजीनियर्स ग्रुप से मिल रही थीं तो उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी की कितनी कमी है तो क्यों नहीं आप नदियों को जोड़ देते हैं, जो बात अब चल रही है। दादी जब पत्रकारों से मिलती थीं तो कहती थीं कि जैसे आप कलम चलाते हो कमल फूल समान बनकर कलम चलाओ, तो उनको भी ये बातें महसूस होती थीं।

दादी अपने अंतिम दिनों में बीमार और दर्द में होने के बावजूद भी कभी उनके चेहरे पर दर्द के भाव नहीं आए, बल्कि वे तो हमें ही सहयोग देती थीं। ऐसी ही न्यारी-प्यारी स्थिति में हमने दादी को देखा। उस स्थिति में भी दादी मुरली मिस नहीं करती थीं। खुद भले नहीं पढ़ पाती थी तो कहती थी कि मुझे मुरली सुनाओ। बीमार होने के बावजूद भी सभी को उनका भरपूर प्यार व मिलती रही।

कमी को दूर कर कमाई करना सिखाया दादीने

-ब्र.कु.कुलदीप बहन, हैदराबाद

कमी को दूर कर कमाई करना सिखाया दादीने दादी ने मुझे बचपन से ही भाग्यशाली होने का वरदान दिया था, वे कहती थीं कि बाबा ने तुम्हें कितना ऊंचा भाग्य दिया है! मुझे बचपन से ही जो भी पॉकेट मनी मिलती थी, वो मैं छुपा-छुपाकर मनीऑर्डर कर देती थी। समर्पित होने बाद मैं हैदराबाद में रहने लगी तो दादी हर साल वहाँ आया करती थीं। उन्हें वहाँ आकर सिन्ध की याद आती थी।

एक बार दिल्ली में बहुत बड़ा मेला हो रहा था, उस समय हैदराबाद में हमारी केवल एक छोटी सी गीतापाठशाला थी और मैं भी छोटी ही थी। दादी ने सभी बड़ी बहनों से पूछा ए.बी.सी. तीन कैटेगरी है, ए वालों को 15 हज़ार, बी वालों को 10 हज़ार, सी वालों को 5 हज़ार, तो मैंने सोचा कि हमारे लिए तो सी ही ठीक है, लेकिन दादी मेरे ऊपर बहुत अधिकार रखती थीं। उन्होंने कहा कि तुमने सी कहा तो अब तुम्हें डबल ए करना पड़ेगा, तो मैंने कहा हाँ, मुझे लगता था कि दादी ने कहा माना बाबा ने कहा, अब तो जान भी देनी पड़े तो मुझे मंज़ूर है। अपने पास कुछ भी नहीं रखते थे। इसलिए दादी मुझे बहुत वरदान देती थीं कि जैसे तुम्हारे पिता का सच्चा दिल है, तुम्हारी माँ का है, ऐसे ही तुम्हारा भी है। फिर मैंने अपने लौकिक पिता को कहा तो उन्होंने उस जिम्मेवारी को पूरा किया।

जब ज्ञानसरोवर बनने वाला था, उस समय मैं किसी तकलीफ के कारण खड़ी होकर चल नहीं सकती थी, पर मैं दादीजी को कैसे कहूँ। मेरा हाथ पकड़कर दादी हर स्थान दिखाती थीं। उस समय दादी ने सभी बड़ी बहनों से पूछा था कि कौन-कौन बैंक का 50 प्रतिशत खाली करके दे सकते है? उसके बाद मैं दादी के कमरे में गई और कहा कि आप कहो तो मैं 100 प्रतिशत भी दे दूँ। तो दादी ने कहा कि नहीं अपने लिए भी रखो, इतना देने की ज़रूरत नहीं है तो भी मैंने अपने बैंक का 99 प्रतिशत निकाल कर दादी को दे दिया। दादी ने मुझे कहा कि ये तो तुमने कमाल ही कर दिया। आज भी मुझे लगता है कि दादी के वरदानों से ही हैदराबाद में सेवा का इतना विस्तार हुआ है। मुझे ऐसा लगता है कि दादीजी आज भी मेरे साथ हैं, मुस्कराते हुए हमेशा मेरे सर पर हाथ रखती हैं। मैं दादी के साथ बिताए दिन कभी नहीं भूल सकती। मुझे बहुत प्यार भरी पालना दादी से मिली है, वो सारे पल मेरे लिए अविस्मरणीय है। उनकी निर्माणता, उनकी सरलता, उनकी मधुरता, उनका करुणामयी स्वभाव मेरे जीवन में समाया हुआ है, मैं उसे कभी भूल नहीं सकती।

एक पत्र दादी के नाम...

मेरी मीठी प्यारी दादी जी ,

आप जहां कही भी हो, हम जानते हैं कि आप हमें देख रहे हो और सुन रहे हो। आज आपके सातवें स्मृति दिवस के अवसर पर अपने दिल की आवाज़ को अक्षरों के साज़ पहनाकर इस खत के माध्यम से आप तक पहुँचाना चाहती हूँ। दादी जी हमने जब मधुबन में कदम रखा और आपको देखा तो एक मिनट की दृष्टि और मुलाकात ने हमारे लौकिक के सारे बंधनो को सेकेण्ड में तोड़ दिया। आपमें वो करिश्माई जादू था जो उस दिन के बाद एक बार भी लौकिक याद नहीं आयी, मोह का रग ऐसा टूटा कि आप और सिर्फ ही मेरे जीवन में रह गए।

आपके संग रहकर हमनें बहुत सारी बाते सिखीं तथा उस शक्ति का अहसास आज भी कर रहे हैं। हमें ऐसा लगा जैसे ब्रह्मा बाबा मधुबन के कण-कण में हैं, वैसे ही आप मधुबन निवासियों के दिलों में गुनगुनाती रहती हैं।

आप कहते थे ना कि सम्मान, प्यार और खुशी देने से मिलता है, तो हमने अपने जीवन में उसका भी अनुभव किया। आपका कहना कि ब्राह्मणों का जीवन स्वतः एक अनुशासन है, मैं इसका भी अनुभव करती हूँ। आप जैसे ही क्लास में मुरली पढते, वो मुरली सबके दिल तक सीधे पहुँचती। मैं सोचती कि दादी की मुरली में ऐसा क्या है कि जो सबके दिलो-दिमाग पर छा जाती। तब मुझे पता चला कि आप इसके पहले तीन बार मुरली का सेवन कर चुके होते। तभी तो हरेक भाई-बहन उसे दिल से अपना लेते और कहते कि मुझे अपनी दादी माँ जैसा बनना है।

दादी आपकी वाणी व दृष्टि में एक ऐसा आकर्षण था कि जो भी आपसे एक बार मिलता उस मुलाकात को वो संजो कर रखता और बार-बार दिल के शोकेश को खोलकर उस एहसास को पुनःश्च अनुभव करता। मुझे याद है कि जब हम मुम्बई से मधुबन में रहने आये, उस समय माउण्ट आबू की ठण्डी सहन नही होती थी तो आप ने मुझे खुद बुलाकर गरम कपड़े पहनाएं। एक मां की तरह हर मधुबन निवासी को आपसे प्यार वा दुलार मिलता रहा तो वह एक बाप की तरह आपने हरेक सुविधा और आवश्यकता का ध्यान रखा। आप अनुभव और निर्णय की इतनी बड़ी ऑथोरिटी होते हुए भी हर बात में मधुबन निवासियों की राय जरूर लेती थीं। आप कहती थी कि मेरे मधुबन निवासी सभी राय बहादुर हैं, लेकिन समय पर सेवा में हड्डी मेहनत करने में भी पीछे नहीं हटते। आप हम मधुबन की कुमारीयों को इतना प्यार करती थी कि अगर एक दिन भी हम आप से न मिले तो दूसरे दिन आप जरूर पूछती थीं कि कल कहां थी ? हम रोज रात्रि को गुडनाइट कहने को आप के रूम में जमा होती, और आप सोने से पहले हमसे मुरली के प्वाइंट पर चर्चा करती थी। इस तरह हम न जाने कितनी ही बातें आपसे सीख जाते थे। वह बातें और वह रोज़ की मुलाकातें हम कभी नहीं भूल सकते। आज भी हमे वो समय याद है जब आप के साथ बारिश में झरना देखने जाते थे,पानी में खूब भीगना और फिर गरम-गरम पकौड़े खाना,क्लास में बैठे-बैठे पहली बारिश की खुशी में आपका उसी समय हलवा बनवाना और सबको खिलाना। हमे यह भी याद आता है कि जो मधुबन मे आते थे उनसे यह पूछना कि आप सभी की तबीयत ठीक है ? सबको रहने का स्थान ठीक मिला है ? किसी को कोई सुविधा तो नहीं चाहिए, यदि कुछ चाहिए तो बोलो। आपकी वह प्यार भरी पूछताछ हम कभी नहीं भूल पायेंगे दादी माँ।

आपने मुझे जब ज्ञानसरोवर सेवा में भेजा तो मुझे मधुबन(पाण्डव भवन) और आपकी याद में रोना आता था। उस समय ज्ञान सरोवर नया नया बना था और अकेलापन महसूस होता था। एक दिन जब आपका फोन आया तो मैं अपने आँसू रोक नहीं पाई और अश्रुपूरित नैनों से मैंने कहा कि दादी आपकी बहुत याद आती है। उस समय आप ४ दिन के लिए बेलगाम जा रही थीं। आपने जब मुझे साथ सेवा पर चलने को कहा तो मैं बहुत खुश हुई। जब आपको पता चला कि यह मेरी पहली हवाई यात्रा है तो आपने मेरे साथ बैठकर हवाई जहाज की एक एक चीज़ दिखा कर परिचय करवाया।

मैने सोचा था कि मैं दादी जी के साथ जा रही हूँ और उनकी सेवा करूंगी ,लेकिन मुझे सेवा का मौका तो नही मिला उल्टा आप ने ही हर कदम पर मेरा ध्यान रखा दादीजी आपको साकार रूप से हमारे बीच से गये हुए सात वर्ष ही हुंए है। लेकिन मधुबन का एक दिन भी ऐसा नही है जो आप याद न आये हो । यह मेरा अकेले का अनुभव नहीं है लेकिन यह हरेक ब्राह्मण, हरेक ब्रह्माकुमारी टीचर के दिल की आवाज है।

हमें याद आता है कि बच्चों के प्रोग्राम में रात्रि ग्यारह बजे भी बच्चों की ज़िद्द पर उनसे मिलना और उन्हें टोली खिलाना तथा आपकी पावरफुल क्लासेज़ भी हमें बहुत याद आती हैं। कुमार तथा कुमारीयों को शक्तिशाली ज्ञान और धारणा की खुराक खिलाने वाली दादी माँ के बारे में अगर मैं लिखने लगूँ तो एक भागवत की रचना हो सकती है। दादी जी आप जहां भी हैं, हमारी दिल की याद स्वीकार करना।

आपकी छोटी सी लाडली ...।

--ब्र.कु. कल्पना ,माउण्ट आबू।

सभी के हृदय कुंज में दादी का प्रकाश पुंज

कलियुग नहीं करयुग है यह, इस कलियुग में कलंगीधर परमात्मा की एक ऐसी रचना जिसने पैदा होते ही अपने चमत्कारिक व्यक्तित्व द्वारा इस धरा पर आध्यात्मिकता की धूम मचा दी। इस आत्मा ने पिछले 45 वर्षों में वो कर दिखाया जो एक आम इंसान कई दशकों में करना तो क्या सोच भी नहीं सकता। पर मैं ये सोचता हूँ कि मैं यह तारीफ क्यों कर रहा हूँ? शायद आप भी ऐसा ही कुछ सोच रहे होंगे, ज्यादा संकल्प न चलें इसलिए हम आपके सामने उस महान आत्मा की आत्मिक कहानी कुछ अति स्नेही और भगवान के यज्ञ-रक्षकों की जुबानी, आपके सम्मुख जीवंत रूप से रख रहे हैं। आप इसे अवश्य पढ़िये और पढ़ने के बाद आप सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि काश हम भी इस महान व्यक्तित्व के आंचल के छांव में पल गये होते...

ब्र.कु.मोहिनी

प्यार व पालने का सिलसिला दादी से कुछ ऐसा मिला

प्यारे बाबा की आज्ञानुसार जापान में होने वाले सम्मेलन में भाग लेने जाते समय चन्द घण्टों के लिए प्यारी दादी जी को लखनऊ आना हुआ। दादीजी से पहली मुलाकात में उन्होने मुझे कहा कि आप बहुत भाग्यवान हो जो आपको इतनी छोटी आयु (12 वर्ष) में भगवान ने पसंद किया। दादी जी जापान चली गईं परन्तु मेरे दिल पर अमिट छाप छोड़ गईं। चंद घण्टों की मुलाकात में उनके वात्सल्य, अपनत्व भरी आवाज़, झील-सी गहरी आँखें जिनमें ममता का सागर लहरा रहा था - इन सबने मेरे दिल में सदा के लिए स्थान बना लिया।

एक वर्ष के बाद जब दादी जी जापान से लौटने वाली थीं तो मैं मधुबन में ही थी। मैंने देखा कि प्यारे बाबा बहुत उमंग और प्यार से दादी जी के स्वागत की तैयारियाँ कर रहे थे। हर ब्रह्मा-वत्स के अंदर दादी जी के प्रति अथाह प्यार देखकर मैं बहुत खुश हो रही थी। उनके आगमन की घड़ियाँ नज़दीक आती जा रही थीं। बहुत ही हर्षितमुख, बेपरवाह बादशाह, सेवा की सफलता से सम्पन्न, प्यारे बाबा से मधुर मिलन मनाती हुई दादी ने हम सबको भी रूहानी नज़र से निहाल किया। मुझे देखकर बोला, आप भी आई हो? मुझे बहुत खुशी हुई कि प्यारी दादी ने मुझे पहचान लिया। तब से उनसे मिलने और पालना लेने का सिलसिला जारी रहा। फिर प्यारे बाबा ने मुझे दादी जी के साथ देहली की अलौकिक सेवार्थ भेजा। दादी जी ने मुझे अपने साथ रखकर छोटी से लेकर बड़ी सेवा करनी सिखाई। उनके संग के रंग में मैं ऑलराउण्डर और हर सेवा में दक्ष बनती गई। मैंने देखा, दादी जी का मम्मा-बाबा के साथ निश्छल प्यार, अटूट भावना, सेवा में समर्पण, हाँ जी का पक्का पाठ और एक बाप दूसरा न कोई की दृढ़ धारणा से सदा एकव्रता स्थिति रही। सत्यता और दिव्यता की प्रतिमूर्ति दादी सदा बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान रह, निश्चिन्त भाव से परोपकार में तत्पर रहतीं और अन्य आत्माओं को सेवा में साथी बनाकर, एकता के सूत्र में बांधकर आगे बढ़ाती रहीं।

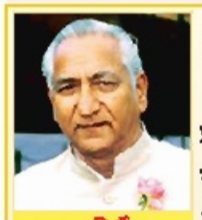

ब्र.कु.निर्वैर

अमूल्य समय के मूल्य को समझती थीं

इस यज्ञ के संस्थापक ब्रह्माबाबा द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशासक के रूप में दादी प्रकाशमणि को ही चुना गया तथा उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ का प्रमुख बना दिया गया। दादी जी की प्रशासनिक कला यज्ञ की पहली प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा के समान ही प्रभावशाली था। ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने से पहले दादी जी के हाथों में हाथ देकर, दृष्टि देते हुए अपनी सभी सूक्ष्म शक्तियाँ दिव्य रीति से सौंप दीं। दादी जी एक कुशल प्रशासक, महान आध्यात्मिक नेता, प्रेम से सबका देखभाल करने वाली माँ और बहन, एक ऐसी स्ट्रीक्ट टीचर जो ज्ञान की गहराइयों में नियमित, सच्चा योगी, एक बहुत ही प्यारी आध्यात्मिक दोस्त थीं। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों को समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थीं। पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी जी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय व शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के द्वारा ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। वे समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं।

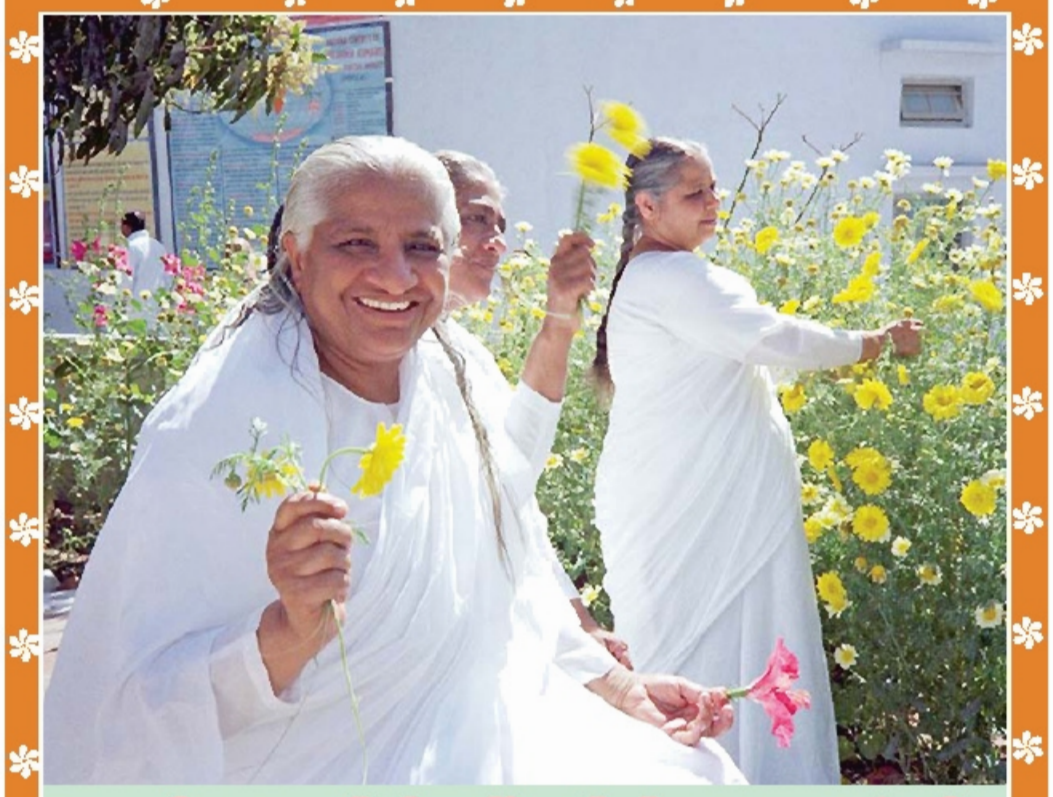

दादी प्रकाशमणि के 7 वें स्मृति दिवस पर श्रद्धांजली

ब्र.कु.मुन्नी

संवारने का प्रबन्धन सीखा दादी जैसी प्रबन्धक से

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादीजी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादीजी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, 'सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और सन्तुष्ट रहने चाहिए'। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना थी।

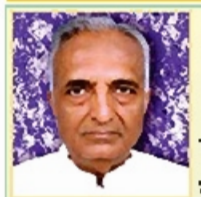

ब्र.कु.रमेश

ऐसी स्नेह भरी पालना थी दादी की

सन् 1952 में जब मेरा इस विश्व विद्यालय के साथ परिचय हुआ तब से इसके सभी अनन्य रत्नों का परिचय तो था ही और कईयों के परोक्ष व अपरोक्ष रूप से सम्पर्क में भी आया था। जब दादीजी और दादी रतनमोहिनी जापान गये तो मैंने दादीजी को पत्र लिखा कि श्रीमद्भगवतगीता पाठशाला के मुखिया पांडुरंग शास्त्री तथा उनके एक साथी जिनके साथ मेरे पहले बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे, वे भी जापान के विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने गये थे। उन्हें भोजन के लिए रोज अपने पास बुलाना और उनकी ईश्वरीय सेवा करना। मैंने शास्त्री जी को भी मुम्बई में कहा था कि वहां आपको खाने की दिक्कत न हो इसलिए मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को लिखा है, आप भी उनसे सम्पर्क करना। जापान की दस दिनों की कान्फ्रेन्स में दादीजी और दादी रतनमोहिनी ने उन दोनों को अपने हाथ से पकाया हुआ पवित्र भोजन खिलाया और साथ ही यज्ञ का इतिहास भी बहुत विस्तार से सुनाया। दादीजी की इस पालना वे प्रभावित हुए और उनके लिए दुआएं भी दीं। परिणाम स्वरूप जब शास्त्री जी मुम्बई आये तब उन्होने मुझे कहा कि रमेश भाई, ब्रह्माकुमारी संस्था का इतिहास सुनकर मैंने जाना कि पुरूष प्रधान समाज ने बहनों की आध्यात्मिक उन्नति में कितनी रूकावट डाली तो मेरी आँखों में पानी भर आया। बाद में हमेशा ही शास्त्री जी का विश्व विद्यालय के साथ स्नेह भरा सम्बन्ध रहा। फिर वे प्यारे ब्रह्मा बाबा तथा प्यारी मातेश्वरी जी से मिलने भी आये। इस प्रकार दादीजी द्वारा अपरोक्ष रूप से उनकी सेवा हुई।

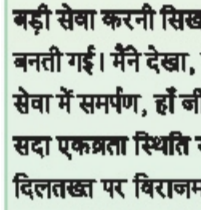

दीदी निर्मला

सवाली के सवाल का चुटकी में हल

दादी जी हर पहलू को सकारात्मक दृष्टि से देखती थीं और सभी नये विचारों को खुलकर अपनाती थी। किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर उसको जांचती थी कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। इस प्रकार सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को प्रेरणा मिलती थी। वे केवल एक अच्छी प्रशासिका ही नहीं थी बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। दादी जी को न केवल ब्राह्मण परिवार बल्कि विश्व की सर्व आत्माओं से बहुत प्यार था। वे सहज भाव से पाण्डव भवन के बरामदे में बैठ जाती थी और सभी के छोटे-से-छोटे सवालों का भी जवाब देती थीं। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी जी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी जी में लव एवं लॉ का सुंदर बैलेन्स था। दादीजी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म-शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादीजी में निर्णय शक्ति बहुत प्रखर थी वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, तुरंत उसे मूर्त रूप देती थीं।

ब्र.कु.ओमप्रकाश

सत्यता की मूरत दादी

लोगों ने सत्यता के गुण की महिमा एवं महत्व बहुत बताया है और ऐसे व्यक्ति करोड़ों में कोई ही होंगे, जिन्होने दुर्गम एवं विपरीत परिस्थितियों में भी झूठ नहीं बोला हो परन्तु दादी जी एक ऐसी महान आत्मा थीं, जिन्होने जीवन में एक बार भी झूठ नहीं बोला है। एक बार शासकीय अधिकारियों का एक ग्रुप दादीजी से मिल रहा था। एक अधिकारी ने पूछा कि दादी जी, एक विभाग का हैड होने के नाते मुझे कामकाज एवं जिम्मेवारी के कारण बहुत तनाव रहता है, परन्तु आप तो सारे विश्व में व्यापक अनेक सेवाकेन्द्रों की हैड हैं तो क्या आपको तनाव नहीं रहता? दादीजी ने सहजता से उत्तर दिया कि मैं स्वयं को हैड मानती ही नहीं इसलिए मुझे हेडेक नहीं होता। हमारा संस्था का हैड परमपिता परमात्मा शिव है, मैं तो एक निमित्त एवं सेवाधारी हूँ।

ब्र.कु.कल्पना

जन-जन को मिले संदेश, यही था दादी का आदेश

हम सभी दिल व जान से दादी जी को याद करते हैं। रात दिन उनकी समीपता की, सहयोग की, सिर पर हाथ की अनुभूति करते हैं क्योंकि हमारी दादी सम्पूर्ण फरिश्ता बनकर ही गए हैं, जिसे हम कर्मातीत स्थिति भी कहते हैं। आज भी दादी जी गुल्ज़ार दादी के तन द्वारा आकर के अपना स्नेह, अपना प्यार समय प्रति समय दे रहे हैं। जो बाबा के बच्चे दादी जी के साथ रात-दिन सेवा में साथ रहे, सहयोगी रहे, उनसे पूरी तरह से अनुभूति किये, वे दादी जी को कभी भी भूल नहीं सकते। मैं हर रोज़ अमृतवेला एवं नुमाशाम पर भी बाबा व मम्मा के साथ दादी जी का फरिश्ता स्वरूप से अनुभव करता हूँ। दादी जी जो संकल्प करती थीं वो कार्य संपन्न हो जाता था। हम सभी ने देखा कि दादीजी ने संकल्प किया कि लाखों की सभा होनी चाहिए और वो सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। विश्व के परिवर्तन के महान कार्य में दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। दादी जी का संकल्प था विज्ञानियों को आगे बढ़ाना, स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना, उसमें भी दादी जी हम सबके साथ हैं। दादी हम सबके साथ हैं, साथ रहेंगी और साथ ही हम सब वापिस अपने सतयुगी दुनिया में जाएंगे। हर गांव एवं शहर के जन-जन तक परमात्म-संदेश पहुँचे इसलिए दादीजी ने ईश्वरीय प्रेरणा से ओम शान्ति मीडिया पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कराया।

ब्र.कु.दिव्यप्रभा

जादुई चिराग जैसा अनुपम व्यक्तित्व

दादीजी के शक्ति स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रमाण बोरीवली स्थित 'प्रभु-उपवन' राजयोग रिट्रीट सेंटर है। बोरीवली में सेवाओं की वृद्धि को देखते हुए, हम सभी के साथ-साथ दादीजी का भी यह शुभ संकल्प रहा कि इस स्थान पर ब्राह्मण परिवार की सुव्यवस्थित पालना हेतु एक बड़ा सेवा स्थान होना चाहिए। लेकिन, मुम्बई जैसे शहर में एक भवन का निर्माण करना, यह कार्य किसी चुनौती से कम नहीं था। यह एक ऐसा शुभ कार्य था, जिसकी सम्पन्नता के पूर्व कई परीक्षाओं को पार करना पड़ा। ज्ञान-योग की शक्ति से कई विघ्न तो पार हो गए, पर कुछेक ऐसी अड़चनें भी थीं, जिन्हें बड़ों के सहयोग के बिना पार करना असम्भव प्रतीत होता था। ऐसी विकट परिस्थिति में दादीजी की छत्रछाया ने मुझे शीतलता प्रदान की। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी मैंने दादीजी के चरित्र में सदैव निर्मानता देखी। पर यह वो क्षण थे जब मैंने शक्ति स्वरूपा दादी जी को अपनी अथॉरिटी यूज करते देखा। मुझमें असीम विश्वास रखते हुए दादी जी ने मुझे अपने दृढ़ निर्णय का सहारा दिया और उस निर्णयात्मक मोड़ पर दादी जी के समर्थ निर्णय ने एक जादुई चिराग की भांति सभी बंद दरवाजे खोल दिये।

दादी में कर्तापन का भान नहीं था

ब्र.कु.संतोष

दादीजी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें मैं शब्द उपयोग करते नहीं देखा। दादीजी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादीजी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मेरा यह विचार, मैं यह करना चाहता हूँ। परन्तु दादीजी ने कभी मैं या मेरा शब्द उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थी। उन्हें भले बैठकर अधिक समय योग करने का समय नहीं मिलता था लेकिन उनका हर कर्म ही योगयुक्त था। कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझते थे। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारे रहते थे। वे सदा सभी को साथ लेकर चलती थी इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते थे। वे हम सभी बहनों को अपनी सखी की तरह प्यार व सम्मान देती थीं। दादी सदा निष्पक्ष रहती थीं। वे कभी किसी पक्ष के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेती थीं। बाबा की याद में रहने के कारण उनकी निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। उनके अथॉरिटी भरे बोल ऐसे होते थे जो हर आत्मा दिल से स्वीकार करती थी कि दादीजी ने कहा माना बाबा ने कहा और मुझे करना ही है। वे क्षमाशील थीं। दादीजी में लव एवं लॉ का सुंदर संतुलन था। दादीजी ने कभी स्वयं को प्रमुख न मानकर निमित्त समझ सेवा की जिम्मेवारी सम्भाली। दादी का मन बहुत ही निर्मल था, किसी का अवगुण उनके चित्त पर ठहरता नहीं था। दादीजी ने अपनी ज्ञान व योग की ऊँची धारणाओं से सभी यज्ञवासियों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा।

अक्षम्य को भी दादी क्षमा करती थीं

ब्र.कु.आशा

दादीजी का दूसरों की गलतियों को क्षमा करने का स्वभाव दिल को छू जाता था। दादीजी कहती थीं कि बाबा, कौड़ी से हीरा, पतित से पावन व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आये हैं। हर आत्मा जो ईश्वरीय ज्ञान-योग का अभ्यास करती है, पुरूषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। उन्होंने सदा सभी पर रहम किया और दिल से गलतियों को क्षमा कर दूसरों को भी बीती बातों को याद न करने की शिक्षा देती थीं। अपने हृदय को स्वच्छ, निर्मल, शक्तिशाली बनाकर फिर से पुरूषार्थ में लग जाने की प्रेरणा देती थी। दादीजी का स्लोगन था, क्षमा करो और भूल जाओ। सभी को सम्मान देकर वे स्वयं सम्माननीय बन गईं। उनका व्यक्तित्व दिव्यता व अलौकिकता से सम्पन्न था।

दादी के वो बोल यादगार बन गये

ब्र.कु.कैलाश

दादीजी इतनी बड़ी हस्ती होते हुए भी हम सभी बहनों के साथ बहुत प्यार से, निर्मानता से रही और हमें रखा। एक बार दादी जब सुबह बाबा की याद में बैठी थीं तो उनको संकल्प आया कि कैलाश बहन को अहमदाबाद में भोग लगाने के लिए भेजूं। दादी ने कहा कि आपको आज सुबह ही अहमदाबाद जाना है, वहाँ दिवाली का भोग है आप भोग लगा के आओ। फिर दादी ने कहा कि कैलाश बहन अब आपको ड्रेस नहीं पहनना है, जो ड्रेस है लच्छू बहन को दे दो और उनसे साड़ी ले लो अब आपको साड़ी ही पहनना है। फिर लच्छू बहन ने मुझे बहुत अच्छे से साड़ी तैयार करके दी। उसके बाद मैं अहमदाबाद में गयी। दादी ने कहा बाबा के भी आपके लिए बहुत ऊंचे संकल्प थे और वही संकल्प दादी के अंदर भी है, बाबा ने आपको बहुत अच्छे स्थान पर भेजा है, अभी आपकी बहुत बड़ी सेवा शुरु होनी है। आप बस निमित्त बन करके हाँजी करते हुए जो सेवा मिले वो करते चलो बाबा आपको दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ाता रहेगा और फिर हम अहमदाबाद ही रह गये। दादी जी के बोल मुझे साधारण नहीं लगे लेकिन लगा जैसे दादी वरदान दे रही है और जैसा दादी ने बोला था सरला दीदी ने थोड़े ही दिनों के बाद नया सेंटर मणिनगर में खोला वहाँ भेजा, वहाँ भी हमने 8-9 साल सेवा की। उसके बाद दीदी को संकल्प आया कि हम गांधीनगर सेंटर खोलें तो उन्होंने दादी से पूछा तो दादी ने कहा कि भले खोलो और वहाँ कैलाश को रखो। फिर दादी ने मुझे वरदान दिया कि आपका हाँजी का पार्ट आपको बहुत आगे ले जाएगा आपको तो कोई मेहनत नहीं करनी है बाबा अपने आप आपसे सेवाएं करवाएगा। दादीजी निर्मानता की मूरत थीं।

सभी को नूरानी नज़रों से देखा

ब्र.कु.बृजमोहन

मैंने स्वयं को सदैव दादीजी के समीप महसूस किया और मेरा सोचना है कि सभी ने ऐसा ही महसूस किया होगा। दादीजी दैवी परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। दादी की नज़रों में सभी एक समान महत्व रखते थे इसलिए उन्होंने कभी किसी को अलग से कोई खास टोली या गिफ्ट नहीं दिया। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना करती रहीं। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता था तो दादीजी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार का मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। दादीजी पूर्णतः निरहंकारी थीं। इतने विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद करती थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होंने बाबा पर दृढ़ निश्चय एवं समर्पण होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। दादी ने शांतिदूत के रूप में कई देशों की यात्राएं कीं और वहां के प्रशासकों से मिलकर उन्हें शान्ति संदेश दिया। दादी से मिलकर सभी को पवित्र प्रेम की भासना आती थी। वो सचमुच एक महान आध्यात्मिक नेता थीं।

दादी को रूहानी डाक्टर के रूप में देखा

ब्र.कु.पुष्पा

ये मेरा परम सौभाग्य रहा कि हमारी प्यारी दादी जी के अंग-संग रहने का मुझे बहुत सुंदर मौका मिला। हम देखते थे कि आपमें हमेशा ही दूसरों को आगे बढ़ाने की भावना रहती थी। हमने देखा दादी हमेशा सभी के गुण ग्रहण करती थीं। भले कोई दादी के साथ ना भी रहे हो। हमने एक बार अनुभव किया कि हम एक बारी 60 टीचर्स थीं, मधुबन में जो हिस्ट्री हॉल है, वहाँ पर हमलोग बैठे थे। दादी और दीदी के साथ हमारा भोजन था, जैसे ही हमारा भोजन पूरा हुआ तो मनोहर दादी ने दादी से पूछा कि क्या आप सभी टीचर्स की आप विशेषता जानती हो? तो बोला हाँ। तो पूछा कि क्या आप बताएंगी तो दादी ने कहा, हाँ। तो एक सेकण्ड में जैसे हम लाइन से बैठे थे, दादी ने एक-एक की विशेषता बतानी शुरु कर दी। यदि किसी की कमी दादी को ध्यान में आती थी दादी बड़े प्यार से बुलानी बिठाती थीं और पहले उसकी विशेषताओं को दादी उसे बताती थीं, कि तुम्हारे पास ये ये विशेषता है। उसके बाद दादी धीरे से उसे कहती थी कि देखो आपने एक छोटी सी गलती है, अगर तुम ये निकाल दो तो तुम सोने की बन जाओगी। जैसे डॉक्टर किसी पेशेन्ट का ऑपरेशन करता है तो सबसे पहले वो उसे एनेसथेसिया देता है, ग्लूकोज चढ़ाता है, शक्ति भरता है उसके बाद ऑपरेशन करता है तो दादी भी किसी की कमी-कमजोरी निकालने के लिए पहले उस आत्मा को प्यार से सुनने के लिए मन तैयार करती थी और अगला व्यक्ति उसे स्वीकार करता था और उसे निकालने के प्रयास में लग जाता था। दादी मेरे साथ बिल्कुल सखी के समान रहती थीं।

वे झुकना जानती थीं

ब्र.कु.सुषमा

एक बार योग भट्ठी में मैं कॉमेन्ट्री से योग करा रही थी और दादी भी सामने बैठी थीं और पता नहीं दादी ने शब्दों को किस तरह से लिया और एकदम योग में डूब गईं। दादी जब बाबा को याद करने बैठती थीं तो उन्हें स्वयं को देह से या अन्य बातों न्यारा करना नहीं पड़ता था, नेचुरल सदा न्यारी ही रहती थी। कर्म करते भी वे डिटैच रहती थी। दादी हमेशा कहती थी कि बाबा बैठा है, खड़ा है, करनकरावनहार है, तो बाबा बाबा करके उन्होंने कभी समझा ही नहीं कि मैं कर रही हूँ। दादी ज्ञान और योग के लिए स्पेशल टाइम देती थीं। दिन में कई बार मुरली पढ़ना, अमृतवेला करना। दादी कारोबार करते भी अपनी पढ़ाई और तपस्या पर पूरा ध्यान देती थीं। दादी स्नेही मूरत थे अतः उन्हें सभी का दिल से सहयोग प्राप्त हुआ। जैसे अंग्रेजी का शब्द है हार्मनी (सद्भावना) तो दादी कहती थी कि हार मानी और बात सुलट गई। दादी झुकना जानती थी, उनमें लचीलापन बहुत था। उनके स्नेही स्वरूप और लचीलेपन के कारण कभी किसी कार्य में गतिरोध पैदा नहीं हुआ। दादी के सामने ईगो प्रॉब्लम तो थी ही नहीं। उनको हर घड़ी ये लगता था कि बाबा का कार्य है और बाबा का काम होना चाहिए। दादी न्यूज़ पेपर वालों को भी कहती थीं कि दादी के नाम पर तो एक रुपया भी नहीं है, बैंक एकाउंट ही नहीं है, तो दादी ने अपना कुछ नहीं रखा और सबकुछ बाबा के लिए किया। दादी के लिए सर्वस्व बाबा ही था।

''तेरी याद आई तो अखियाँ भर आई''

उनके प्रशासन की चहुँ ओर प्रशंसा होती थी..., जब वे चलती थीं तो हज़ारो के होठों पर मुस्कान झलकने लगती थी..., जब वे मुरली सुनाती थीं तो सबके मन मयूर नृत्य करने लगते थे..., जब वे फैसले देती थीं तो उसमें विश्व कल्याण की भावना दृष्टिगोचर होती थी और जब वे योग में बैठती थीं तो प्रभु-प्रेम की तरंगें चहुँ ओर अनुभव होती थीं... जिनका अभाव आज सभी को अत्यधिक महसूस होता है। सब बहुत कहते हैं कि काश आज वे होतीं। जिनकी पुण्य तिथि 25 अगस्त सम्मुख है। प्रस्तुत हैं उनके जीवन की कुछ महानताएँ। उनकी ममतामयी बातें...

बात 40 वर्ष से भी ज़्यादा पूर्व की है। माउण्ट आबू, हमारे मुख्यालय में 50 पत्रकार प्रथम बार आये। दादी जी ने शाम के समय सभी का स्वागत किया और इतनी प्यार भरी वाणी बोली कि अगले दिन 20 अखबारों में छपा...''प्यार की प्रतिमूर्ति दादी प्रकाशमणि''।

वे सबको अपनेपन की भासना देती थीं। उनकी दृष्टि ही ऐसी थी कि ये सब हमारा परिवार है। इसमें सब खुश रहें। संगठन में अनेक लोग गलती भी करते थे परन्तु उनका शिक्षा देने का तरीका अति स्नेह-पूर्ण था। हम भी तब छोटे थे, हम भी कई गलती करते थे, परन्तु दादी ने कभी डाँटा नहीं, बल्कि सिखाने की दृष्टि से प्रेरक बोल बोले।

इस बात के लिए वे बहुचर्चित थीं कि वे प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। उनके चेहरे पर सदा प्रेम व खुशी की झलक देखी जा सकती थी। उनकी प्रसन्न मुद्रा के कारण कोई भी उनसे सहज ही मिल लेता था। यद्यपि वे ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ थीं, परन्तु उनके प्रशासन में डर नहीं प्रेम था।

वे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित थीं ब्रह्माबाबा उन्हें ज्ञान की बुलबुल कहते थे। वे सफल वक्ता व श्रेष्ठ चिंतक थीं। उनके चहुँ ओर अनेकों ने प्रकाश की झलक देखी थी। उनकी वाणी बड़ी ही प्रभावशाली थी। सब गर्व करते थे कि हमारी चीफ श्रेष्ठ स्वीकर हैं।

ज्ञान सुनाना तो सभी को आता है, परन्तु ज्ञान-स्वरूप जीवन बनाना - वे इस कला में पारंगत थीं। वे कहती थीं कि हमारा जीवन ज्ञान दर्पण है, इसमें सभी को अपने चरित्र की तस्वीर दिखनी चाहिए। हमने सदा ही उन्हें ज्ञान की मस्ती में मग्न देखा। यही कारण था उनकी वाणी में प्रभाव का। जब वे ईश्वरीय महावाक्य सुनाती थीं तो हॉल में परम आनंद का माहौल बन जाता था और इतने सरल ढंग से महावाक्य सुनाती थीं कि वे सहज ही हृदयंगम हो जाते थे। सागर जैसा दिल था उनका...

वे तब से संस्था की मुख्य प्रशासिका थीं, जब यज्ञ साधारण था अथवा धन-संपन्न नहीं था, परन्तु इस महान यज्ञ में वे अति उदारता से ब्रह्मा भोजन कराती थीं, क्योंकि ये हमारा विषय था। हम देखते थे कि खिलाने पिलाने में राजाओं जैसा दिल। प्रति वर्ष सभी को पूरे वर्ष के वस्त्र मिलते थे, उसमें सबको खुश रखती थीं। लिस्ट लेती थीं कि किसको क्या चाहिए, ताकि उनके परिवार में किसी को कोई तंगी न हो।

वे ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी टीचर्स को भी कहती थीं कि बड़ा दिल

रखो। बड़ा दिल रखोगे तो भण्डारे भरपूर रहेंगे। अपने साथियों को खुश रखो, उनकी दुवाओं से सेवाएँ बढ़ेंगी। जहाँ भी कुछ खर्च करने की बात आती, तो वे एकोनॉमी तो अवश्य सिखती थीं परन्तु दिल खुला रखती थीं।

हमने देखा इस धर पर सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को...

इन आँखों से दादी प्रकाशमणि के रूप में सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को देखने का सौभाग्य मिला। उनकी दृष्टि निर्मल, वाणी सुखद और वृत्ति अति कल्याणकारी थी। उनके मुख की चमक उनकी पवित्रता की झलक थी। वे निष्पाप थीं और कर्मठ थीं।

ऐसी पवित्र आत्माएँ इस वसुन्धरा पर वरदान होती हैं। उनका पुनर्जन्म भी ऐसे महान श्रीमानों के घर हुआ जो पानी भी प्रभु-अर्पण करके पीते हैं, जिनका प्रांगण सात्विक है और स्वयं भाग्य विधाता ने उन्हें महान कर्तव्यों के लिए ही वहाँ भेजा है। हमने देखा कि उनकी पवित्रता के समक्ष ही अनेक महामण्डलेश्वर महात्माओं के शीश भी झुकते थे।

बुद्धि तैयार होती है उनकी महानताओं को अपनाने के लिए...

वे महान थीं। महान मनुष्य में जो महान धारणाएँ होती हैं, उन्हें अपनाने को मन करता है। वे पूर्णतया संतुष्ट थीं, निरहंकारी थीं, हर्षित चित्त थीं, किसी का भी अवगुण याकिया गया बुरा व्यवहार उनके चित्त पर नहीं रहता था। उनके मन में किसी के लिए भी बदले का भाव नहीं देखा गया। हमने देखा उन्हें सभी को क्षमा करते। वे नम्रता व मृदुता की प्रतिमूर्ति थीं, क्रोध व आवेश से परे थीं। उनका व्यवहार योग्य था। सभी छोटी-बड़ी टीचर बहनें उनसे मिलकर महसूस करती थीं कि वे हमारी हैं और हम कभी भी ज़रूरत पड़े तो दादी जी उनके साथ रहेंगी। उनकी छत्र-छाया में वे अपने को सुरक्षित अनुभव करती थीं।

वे दयावान थीं, किसी के आँसू नहीं देख सकती थीं। स्वयं परम-शिक्षक परम-आत्मा ने भी उनकी महिमा करते हुए कहा था कि वे 'मैं' पन से मुक्त, सदा निमित्त, निर्मान भाव में रहने वाली निर्मल चित्त थीं। वे ऐसी प्रशासक थीं जो सभी का बहुत ध्यान रखती थीं। वे सरल स्वभाव सम्पन्न सहज योगी थीं। अपने सम्पूर्ण संगठन की प्रसन्नता का बहुत ख्यान करती थीं। आज सभी उनके इस आचरण को स्मरण कर उनका अभाव महसूस करते हैं।

ये महानताएँ मनुष्य को महा मानव बनाती हैं। हम भी उन्हें जीवन में अपनायें। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली है। वे स्वयं तो आगे बढ़ती ही थीं, परन्तु दूसरों को आगे बढ़ाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती थीं। ऐसी थीं वे महान आत्मा। आईये उनके स्मृति दिवस पर उन जैसे राजाई संस्कार बनाने का संकल्प करें। जब उनके साथ बिताये गये दिन याद आते हैं तो सिर श्रद्धा से झुक जाता है। उन्हें याद करने का अर्थ है, उन जैसा समर्पण भाव स्वयं में अपनायें। जितना उनमें प्रभु-प्रेम था, जितना उनमें यज्ञ-प्रेम व मुरली-प्रेम था, वैसा ही हम भी रखें। हम श्रद्धा पूर्वक उन्हें नमन करते हुए उन्हें अपना प्रेम व सम्मान अर्पित करते हैं। - **ब्र.कु. सुर्य ,माउण्ट आबू।**

दादी जैसे महारथी का सारथी बना

-ब्र.कु. प्रकाश,दादी काटेज, शांतिवन।

वैसे तो इस दुनिया में महान विभूतियाँ जन्म लेती हैं जो अपने पीछे बहुत सारी स्मृतियाँ प्रेरणा में सबके लिए छोड़कर जाती हैं, ऐसे ही हैं हमारी स्नेही, अति प्यारी, अति मीठी आदरणीय डॉ.दादी प्रकाशमणि जी, जिनके बारे में क्या कहें, जितना कहें, लिखना चाहें शब्द अधूरे हैं। दादी जी का जीवन सम्पूर्ण है, सार्थक है और प्रेरक है। मुझे दादी जी के साथ 14वर्ष बहुत समीप से उनकी सेवा करने का चांस मिला। दुनिया में हरेक मनुष्य किसी महापुरुष, साधु-संतों का सानिध्य पाना चाहते हैं, परंतु मुझ आत्मा को ऐसी श्रेष्ठ परम पवित्र, ममतामयी, वातसल्य स्वरूपा दादी जी के समीप रहने का सुनहरा चांस मिला। मैं जब मधुबन समर्पित होकर बड़ों के साथ समीप यदि रहने का चांस मिले तो इससे बड़ा भाग्य और क्या हो सकता। बाबा ने मेरा यह संकल्प भी पूरा किया मधुबन में एक साल सेवा करने के बाद दादी प्रकाशमणि जी की गाड़ी चालाने का पहला दिन आज भी मुझे याद है। शुरु-शुरु में यज्ञ में एकाध कार ही थी। एक दिन इन्चार्ज भाई ने मुझे दादी को आबु रोड ले जाने को कहा उस समय मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। दादी जी मेरी गाड़ी में आगे बैठी, मोहिनी बहन जी, मुन्नी बहन तथा ईशु दादी जी पीछे की सीट पर। किसी ने भी ऊपर से नीचे संगम भवन तक मेरे से बात नहीं की। जब वापिस ऊपर जाने लगे रास्ते में एक मोड़ पर दादी जी ने मेरे कंधे के ऊपर हाथ रखकर मेरे से पूछा प्रकाश आज के बाद दादी जी की सेवा करने का चांस मिले तो करोगे? दादी जी ने विनम्र भाव से मेरे से पूछा मैं उसी समय दादी जी को कहा, दादी जी बाबा ने एक साल के अंदर ही मेरा संकल्प पूरा कर दिया। उसके बाद 14 वर्ष लगातार दादी जी की सेवा करने का भग्य मिला। दस दौरान दादी जी को समीप से देखने का अवसर मिला।उनका हर कार्य उठना, चलना, बैठना अलौकिक छाप सभी के मानस पटल पर छोड़ जाती थी, हर कर्म में गुण विशेषता दिखाई देती थी। एक बार की बात है मैने एक अज्ञानी भाई को गाड़ी चलाने की सेवा पर रखा था, एक दिन उसने शराब पी ली, बात दादी जी तक गई। मुझे बुलाया गया, दादी जी ने पूछा मैं क्या सुन रही हूं? मैने कहा दादी जी आपने ठीक सुना है, मैं सुबह उस भाई को निकाल दूंगा। दादी ने कहा नहीं मैने इसलिए नहीं बुलाया है, उस भाई को एक मौका अवश्य दो, भूल की है तो रियलाइज का मौका दो। देखो दादी जी का उस आत्मा के प्रति भी कितनी श्रेष्ठ भावना परिवर्तन करने की थी। आज हम सभी उनको बहुत मिस करते हैं, उनके स्मृति दिवस पर हम उनके जीवन से यही प्रेरणा लें जैसा कि दादी जी ने अपने हर कर्म से चाल-चलन से बाबा की प्रत्यक्षता की.। उनकी विशेषताओं कों अपनाकर ही सच्ची श्रद्धांजलिअर्पित करनी होगी।

दादीजी का विश्वास नही होने देता था हताश

- ब्र.कु.शशिप्रभा,पाण्डवभवन।

1974 से मैंने स्थायी रूप से पांडव भवन में रहना आरंभ किया तब से दादी जी ने मुझे आध्यात्मिक जीवन की उन्नति में पूरा सहयोग दिया। दादी जी पूर्ण विश्वास के साथ मुझे कोई कार्य सौंपती थीं। जब मैं बिल्कुल नयी थी और किस कार्य को कैसे करना है वो अच्छी तरह नहीं समझ पाती थी तो दादी जी से बता देती थी कि 'दादी जी आपने मुझे ये कार्य दिया है, पर मुझे ये कैसे करना है नहीं आता'। दादी जी जवाब देती थी, बाबा और दादी को आपमें विश्वास है कि आप इस कार्य को कर लेंगी। दादी जी का विश्वास मुझे सदैव प्रेरणा देता रहा।

सभी सेवाओं के साथ-साथ मुझे विदेशी भाई-बहनों के आवास-निवास की व्यवस्था की फ-जम्मेवारी भी सौंपी गई। दादी जी को सभी आत्माओं को मधुबन में बुलाना बहुत पसंद था परंतु कई बार ऐसा होता था कि रहने का स्थान पूरा भर जाता था और कई विदेशी भाई-बहनों को स्थान नहीं मिल पाता था। एक बार मैंने दादी जी से पूछा कि दादी जी हमारे पास अभी ज्यादा स्थान की सुविधा नहीं है तो और अधिक आत्माओं को क्यों बुलाना? तो दादी जी ने कहा कि ये बाबा का घर है, यदि दिल बड़ा हो तो सब कुछ संभव है। थोड़ा एडजस्ट करने और दोबारा व्यवस्था करने पर सब आसानी से हो जाता था। कई बार दादी जी स्वयं हॉल की व्यवस्था देखने जाती थीं।

दादी जी ने मुझे बोलने की कला सिखाई जिसके लिए मैं सदा उनकी आभारी रहूंगी। दादी जी की बोलने की कला बहुत ही प्रभावशाली थी और स्पष्ट होती थी। जिसको भी जो सेवा देनी होती थी तो दादी जी व्यक्तिगत रूप से उनसे बात करती थी और फिर चेक करती थी कि सब कुछ ठीक चल रहा है। यही कारण है सभी प्रोजेक्टस दादी जी के निर्देशन में सफल हुए। दादी कभी ऐसा नहीं कहती थीं कि ये काम दादी ने किया है वो सदा कहती थीं कि ये सब बाबा का कमाल है, वही सब कुछ कर रहा है।

लंबे समय तक पांडव भवन में रहकर मैंने दादी जी से हर प्रकार का प्रशिक्षण लिया। दादी जी कभी किसी की कमज़ोरी अपनी बुद्धि में नहीं रखती थीं, परंतु एक विशाल समुद्र की भांति सभी की कमी-कमज़ोरियों को अपने में समाकर क्षमा कर देती थीं। दादी जी ने हमें सिखाया कि यदि हमारा मन-मस्तिष्क क्लीन और क्लीयर है तो हमारा बाबा के साथ योग पावरफुल होगा, हम अपने से बड़ों के समीप आयेंगे और सदा बाबा की छत्रछाया में अपने को महसूस करेंगे। दादी जी के मुझपर अटूट विश्वास ने मुझे स्वयं पर तथा अपने ब्राह्मण जीवन में विश्वास करने में सहायता की। दादी जी ने बहुत ही प्यार के साथ मेरी पालना की जिसके लिए मैं सदा उनकी शुक्रगुज़ार रहूंगी।

दादी मे शिवबाबा की छबी दिखाई देती थी।

- दादी रतनमोहिनी

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करना है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में बाबा से आ गईं। बाबा समान ही दादी के अंदर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी हैं।

दादी जी ने बाप समान सबकी पालना की।

कोई भी सेवा हो, निमंत्रण आये बाबा दादी को ही भेजते थे। पहले-पहले जापान से जब निमंत्रण आया। उसमें दादीजी पहला पार्ट रहा। बाबा समान सबकी पालना , सबके ऊपर ध्यान देना तथा मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबन्ध करना, यह सब दादी खुद करती थीं । रात्रि में पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ, बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ है न।

दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाल थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी वैसे ही ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगना नहीं पडता था । जैसे बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबन्ध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए वैसे दादी ने बच्चों को ऐसा प्रबन्ध दिया। कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आद यान न आये।

दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था।

राजयोग प्रशिक्षण का प्रथम प्रशिक्षक दादी ने बनाया

- राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता,माउन्ट आबू।

प्रभु के आकाश का देदीप्यमान सितारा आदरणीया प्रकाशमणि दादी जी का जैसा नाम वैसा ही व्यक्तित्व था। परमपिता परमात्मा के सत्यज्ञान का प्रकाश, सचमुच ही दादी जी ने अपने उत्कृष्ट आचरण द्वारा समग्र विश्व में फैलाया।

यह परम सौभाग्य रहा कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में जब से हम आये, हमारे परिवार का संबंध दादी जी से ही रहा। हमें शुरु से ही दादी जी की पालना मिली।

सन् 1975 से 1985 के दौरान राजयोग शिविर कराने हेतु दादी जी ने भारत के विभिन्न राज्यों में मुझे भेजा। दादी ने ईश्वरीय कार्य को समग्र विश्व में फैलाया और सबका उमंग-उत्साह बढ़ाते हुए बेहद कार्य कराती रहीं।

समर्पण जीवन के 22 वर्षों तक मैं सेवाकेन्द्रों पर रहकर सेवा करती रही। उसके बाद सन् 1993 से मुख्यालय में दादी जी के पास रहने का मौका मिला। एक बार टीचर्स बहनों की सघन योग-तपस्या का कार्यक्रम चल रहा था। उसकी दिनचर्या संचालन की सेवा मुझे दी गई थी। दादी जी उसमें क्लास कराने जा रही थीं। जाने से पहले दादी जी ने मुझे कहा, गीता, आज मै ऐसा क्लास कराऊंगी, सबके लिए मार्गदर्शन दूंगी। तुम व्यक्तिगत रूप से फीलिंग में नहीं आना, उन्नति की बात समझना। दादी जी यज्ञ की निश्चित हुई दिनचर्या का खुद भी ध्यान रखती थीं। दादी कोई भी मीटिंग करते हुए सभी यज्ञ सेवाधारीयों कव ध्यान रखती थी। ऐसे महान बहुमुखी व्यक्तित्व सम्पन्न दादी जी तो सदा कदम-कदम पर मेरे सामने रहती हैं और जीवन भर रहेंगी।

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

घी दुष्पाच्य और कब्ज कारक

घी दुष्पाच्य और कब्ज कारक है। पचता तो है ही नहीं। कारण कि यह घुलनशील नहीं है। पेट को उसे घुलाना और दूध बनाना पड़ेगा और जब नहीं बनता तो शरीर उसे बाहर फेंक देता है। घी दुष्पाच्य एवं घनीभूत होने से आँतों को कठोर श्रम करना पड़ता है और जीवनी शक्ति का अपव्यय ही होता है। साथ ही रेशा नहीं होने से कब्ज करेगा।

उदाहरणार्थ एक कटोरी में पानी और घी लेकर मथिये, घुलाइये पर वह घुलेगा नहीं। अत: घी खाने से क्या लाभ? खून तो बन ही नहीं पाता। अत: तन-मन और धन की बरबादी। साथ ही पेट की अग्नि और आँतों की क्रियाशीलता मन्द हो कब्ज हो जाता है। शरीर मल को बाहर फेंकना बन्द कर, हड़ताल कर देता है।

सफेद चीनी - मीठा ज़हर।

चीनी की जगह प्राकृतिक देशी गुड़ इस्तेमाल कर सकते हैं। सफेद चीनी प्राकृतिक शर्करा का एक अतिविकृत रूप है। इसे पचाने के लिए शरीर में कई तत्वों एवं विटामिन की कमी हो जाती है जिससे शरीर के अन्य कार्यों में बाधा पड़ती है। वैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर सफेद चीनी की तुलना मदिरा से की गई है।

सफेद चीनी को अधिक मात्रा में प्रयोग में लाने से दांतों के रोगों में वृद्धि होती है। इसके अधिक प्रयोग से जिगर, आर्थराइटिस व मधुमेह के रोग हो जाते हैं। इसके अत्यधिक प्रयोग से कैंसर होने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है। चीनी की वजह से रक्त में कोलेस्ट्रॉल की वृद्धि होती है। पेट की गड़बड़ी का मुख्य कारण भी चीनी है। चीनी के प्रयोग से साईनस हो जाता है। इसके अत्यधिक प्रयोग से स्नायु-दुर्बलता, महिलाओं में मासिक धर्म के समय दर्द, श्वेत प्रदर इत्यादि हो जाते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा के लिए सफेद चीनी को त्याग देना ही उत्तम है। जब चीनी आँतों में जाती है तब पचाने के लिए विटामिन की ज़रूरत होती है। मिठाइयों में कोई विटामिन्स नहीं हैं इसलिए उनके पाचन के लिए लीवर के विटामिन्स का उपयोग होता है। विटामिन्स की कमी से व्यक्ति कमज़ोरी महसूस करता है। यही कारण है कि जो लोग अधिक मीठा खाते हैं वे कमज़ोरी की शिकायत करते हैं। चीनी का आँतों में रहे जीवाणुओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आँतों में रहे जीवाणु जीवन-रक्षा के लिए बहुत उपयोगी हैं। चीनी जब लीवर में जाती है तब लीवर ट्राईग्लिसराईड नामक चर्बी छोड़ देता है। यही कारण है जिससे ट्राईग्लिसराईड की मात्रा ज़्यादा होती है। आपने भी अनुभव किया होगा कि आपके रक्त में ट्राईग्लिसराईड बढ़ा हो तो डॉक्टर कहते हैं कि मीठा कम खाओ। जब भी मिठाइयाँ खाते हैं तो शरीर रक्त में चीनी के नियंत्रण की कोशिश करता है। इसके लिए अग्नाशय को बड़ी मात्रा में इंसुलिन का निर्माण करना पड़ता है। उस समय एक प्रकार की इमरजेन्सी का समय होता है जिससे अग्नाशय थक जाता है।

जब चीनी रक्त में जाती है तब वह कैल्शियम के साथ लड़ती है और कैल्शियम को हड्डियों में जाने से रोकती है इसलिए हड्डियां कमज़ोर होती हैं।

जिनको डायबिटीज़ है तथा मीठा खाने की इच्छा होती है तो दिन में मीठे फल के साथ अन्जीर और खजूर का सेवन कर सकते हैं। फलों में जो मिठास है वह भिन्न प्रकार का होता है। मिठाइयों में शुक्रोज़ होता है जो रक्त में तुरन्त ग्लूकोज़ को बढ़ाता है और फलों में फ्रुक्टोज़ के साथ अन्य विटामिन्स भी होते हैं जो उसका पाचन करने में मदद करते हैं। इसलिए फल खाने के बाद कमज़ोरी नहीं आती बल्कि शक्ति का अनुभव होता है। मिठाइयां खाने के कुछ समय पश्चात् भूख लगती है या कमज़ोरी आती है।

कोई भी मीठी चीज़ से हम खाना शुरु करते हैं तो शुरु से अंत तक नुकसान ही नुकसान है। जैसे आप कोई मीठी चीज़ चबाना शुरु करते हैं तो मुख में जीवाणु निर्मित होते हैं। यही जीवाणु एसिड का निर्माण करते हैं और एसिड का दांतों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

मेहबूब नगर की समता बहन, उम्र- 56, को साईनस, सिरदर्द, शरीर ढ़ीला हो जाना आदि समस्याएँ थीं जो स्वर्णिम आहार पद्धति अपनाने से ठीक हो गयी।

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

ब्र.कु. ललित शांतिवन

सद्गुण और दुर्गुण के बीच का युद्ध है महाभारत

दु:शासन - जिसके जीवन में अनुशासन नाम की चीज़ ही न हो। ऐसे दु:शासन भी देखने को मिलते हैं। दुशाल, दुर्मुख, दुष्कर्ण, अर्थात् 'दु' से ही सारे नाम देखने को मिलते हैं। जिसका भावार्थ है 'दुख देने वाला या जिसमें दुष्टता कव भाव समाया हो। उनकी एक बहन भी थी जिसका नाम था 'दुशाला'। आज संसार में भी अधिकतर लोग, जो देखने को मिलते हैं, उनके मन के अंदर कहीं न कहीं दुष्टता का भाव है या दूसरों को दु:ख देना जानता है वही अधर्म पक्ष का और कौरव पक्ष का वाचक है। इतना ही नहीं जैसे दुर्योधन ने कहा था धर्म क्या है? मैं जानता हूँ। अधर्म क्या है? उसे भी मैं जानता हूँ परंतु धर्म के मार्ग पर चलने की शक्ति मुझमें नहीं है और अधर्म को मैं छोड़ना नहीं चाहता हूँ। क्योंकि जीवन में कमजोरी आ गई है। उसी को कहा जाता है कि ये अधर्म पक्ष के वाचक या ये कौरव पक्ष में रहने वाले कौरवी सम्प्रदाय हैं।

आज विश्व जब महाविनाश के कगार पर खड़ा है। यह वही कुरुक्षेत्र वाली स्थिति है। ऐसे समय पर मानव जाति को इस संघर्ष में गीता ज्ञान की आवश्यकता है। एक दैवी इच्छा, ईश्वरीय इच्छा जो एक अलौकिक कार्य को पूर्ण करने का यंत्र अर्थात् सच्चे स्वरुप से खुदाई खिदमतगार बनने हेतु, हमें योद्धा बनने के लिए पुकार रहा है। इस अलौकिक चेतना के प्रसार हेतु हमें पहलवान बनना है। यह इसी तरह का ही युद्ध स्थल है। जिसके लिए सर्वोच्च सत्ता 'भगवान' हमें पुकार रहा है। यही कारण है कि आज मानव दुविधा की स्थिति में फटेहाल किं कर्त्तव्य विमूढ़ बना गीता के संदेश का अनुसरण कर रहा है। यह वही महाभारत वाली स्थिति पुन: हम सबके सम्मुख आकर खड़ी हो गयी है। यही कारण है कि गीता का जन्म कुरुक्षेत्र के महासंघर्ष के बीच में दिखाया गया है। जहाँ दोनों सेनायें आमने-सामने खड़ी हैं, प्रक्षेपास्त्र चलने शुरू हो गये हैं, युद्ध का शंखनाद गूंज उठा है। युद्ध की उत्तेजना का कोलाहल में, संघर्ष के कारण सैनिकों का हृदय विदर्ण होने लगा है। ऐसे समय पर गीता ज्ञान दिए जाने के कारण ही गीता को 'संघर्ष का शास्त्र' भी कहा गया है। यह संघर्ष में विजयी होने की प्रेरणा देने वाला शास्त्र है। श्रीमद्भगवद्गीता माना जीवन संग्राम में शाश्वत् विजयी बनने का क्रियात्मक प्रशिक्षण है इसलिए इसे 'युद्ध ग्रंथ' भी कहा गया है। जो वास्तविक विजय दिलाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम श्लोक जब धृतराष्ट्र संजय से पूछता है कि हे संजय! धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र में क्या हो रहा है? इसका हाल तुम मुझे सुनाओ। ये नहीं कहा कि कुरुक्षेत्र और धर्मक्षेत्र में क्या हो रहा है? नहीं! धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र अर्थात् जहाँ सभी इक्ट्ठे हुए हैं जो धर्म का आचरण करना नहीं जानते हैं, ऐसा धर्मक्षेत्र। 'ये जीवन ही एक धर्मक्षेत्र है' जहाँ इंसान को नित्य धर्म को आचरण में लाना चाहिए। जब वह नहीं ला सकता है, तब यही कुरुक्षेत्र बन जाता है अर्थात् युद्ध करने का स्थान बन जाता है। जहाँ एक तरफ दैवी संस्कार हैं तो दूसरी तरफ आसुरी संस्कार हैं, एक तरफ सद्गुण है तो दूसरी तरफ दुर्गुण है। ये सद्गुण और दुर्गुण के बीच, दैवी और आसुरी संस्कारों के बीच यह युद्ध है। उसका हाल तुम मुझे सुनाओ की वहाँ पर क्या हो रहा है? कुरुक्षेत्र केवल हरियाणा प्रदेश का मैदान नहीं है। कुरुक्षेत्र का मैदान तो आज भी वहाँ पर है, लेकिन उस मैदान को देखते हुए अंदर में ये विचार आता है कि आक्षौणी सेना यहाँ खड़ी कैसे हुई होगी! एक कुरुक्षेत्र हम सब के भीतर भी है, हमारी अंतर्चेतना में। जहाँ एक तरफ आसुरी संस्कार हैं या आसुरी शक्तियां तैनात है और दूसरी ओर दैवी शक्तियां है जो एक-दूसरे के सामने, तैनात हैं। हमारी चेतना के भीतर निरंतर ये युद्ध चलता रहता है। श्रीमद्भगवद्गीता में 700 श्लोक है जो 18 अध्यायों में बटे हैं। **-कमश।**

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

अश्वमेध यज्ञ की मेधा थीं दादी प्रकाशमणि

परमात्मिक यज्ञ की शोभा और उसे अपनी मेधावी छवि से चलाने वाली शान्ति का नाम दादी प्रकाशमणि है। वह मेधा की अविरल धारा थीं। एक ऐसी विदुषी सशक्त नारी जिनकी अध्यात्म प्रज्ञा प्रखर थी। कहा भी जाता है कि नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में क्रान्ति ला सकती है। दादी प्रकाशमणि का अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता द्वारा उन्होंने जीवन के तरीके को विकसित किया।

दादी जी को ऐसे ही रत्नप्रभा का सम्मान नहीं दिया गया। उन्होंने बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन की संकल्पना के साथ कार्य किया। दादी जी दिव्य बुद्धि व मेधा की अदभुत मिसाल थी। उनके लिए ही एक बात दिल से निकलती है कि ''किन लफ्जों में बयां करूं उनकी उल्फत को यहां।

सुन सभी लेते हैं, बयां करने वाला कोई नहीं।उनकी मेधा की परख तो इसी बात से लगाई जा सकती है कि उन्होंने इच्छाओं को जो दुनिया की सबसे अ-सहज स्थिति है, को पार किया। वह कहती इच्छा मात्रम अविद्या का यदि सभी ध्यान रखें तो सहज ही कई समस्याओं से पार हो सकते हैं। इच्छाएं मनुष्य को कई प्रकार से ऊंचे से नीचा तथा नीचे से ऊपर का अनुभव कराती है। वे कहती इच्छा चीज़ ही ऐसी है, जो अच्छा है उसे बुरा बना देती है। मनुष्य इच्छा करता है कि मैं अच्छा बनूं, यह इच्छा भी अच्छा बनने नहीं देती। दादी कहती थीं कि यदि आपको अच्छा का ज्ञान है तो अच्छा नेचुरल बनना चाहिए न कि इच्छा से। मनुष्य इच्छा करता है कि मुझे सभी प्यार की दृष्टि से देखें, तो इच्छा से सभी प्यार की दृष्टि से नहीं देखेंगे। यदि मैं सभी को प्यार की दृष्टि से देखूंगा तो सभी से प्यार मिलेगा। इच्छायें वस्तु एवं वैभवों के हैं और ये वस्तु या वैभव सब अल्पकालिक हैं, वह चीज़ आज है तो कल नहीं है, और जब नहीं है तो फीलिंग आयेगी। और यदि फीलिंग या इमोशन्स के आधार पर जीयेंगे तो फेल हो जायेंगे। इच्छा से मेहनत करने पर मनुष्य बहुत भारी हो जाता है, क्योंकि इसमें हार-जीत दोनों है। मुख्य प्रशासिका के तौर पर व्यस्तताओं के बावजूद स्वयं का पुरुषार्थ बनाये रखना और आत्मोन्नति बनाये रखना किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं। दादी जी की मेधा इस कदर प्रखर थी कि संस्था के सिद्धांतों के अनुरुप कभी भी किसी के समक्ष हाथ फैलाया हो। वह कहती इस बात पर ही तो निश्चय चाहिए, कि कराने वाले अपने आप ही हमसे करवायेगा।

मेधा का ही एक अनुपम उदाहरण है कि दादी जी ने 16 प्रभागों का गठन किया। जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षाविद, युवा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, समाज सेवा आदि-आदि शामिल हैं। जिन प्रभागों के अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारम्भ हुआ। यही प्रभाग तो अपने-अपने क्षेत्र में विश्व-बंधुत्व का बोध जगा रहे हैं। दादी जी मेधावी थीं ना, इसलिए उनमें विवेक व भावना का संतुलन था। वे कहती थीं जिस घर में ज्यादा मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। वे मेहमान भगवान के बच्चे हैं, पवित्र आत्माएं हैं, व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरदारी करनी चाहिए। वे सच्ची कर्मयोगी थी, सारे दिन कर्म करके वे ऐसी दिखती जैसे कुछ किया ही ना हो। उनका विवेक यह कहता था कि जो सब कहें वही करो। कभी भी अपने को उन्होंने प्राथमिकता नहीं दी।

- ब्र.कु.अनुज, डिफेन्स कॉलोनी,दिल्ली

Peace of Mind - TV Channel

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

Airtel Digital TV Channal No. 686

सूचना– ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं एक गृहस्थी माता हूँ। मेरी एक लड़की है। जब से वो आठवीं क्लास में गयी है, तब से जहाँ भी जाती है, एक बॉयफ्रेन्ड बना लेती है। अब उसके बहुत सारे बॉयफ्रेंड हैं। वो उनसे ही बात करती रहती है। हमारी कुछ नहीं सुनती। हम इस लड़की से बहुत परेशान हैं। उसके लिए क्या करें?

उत्तर: विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को अनेक सुख-सुविधाओं के साधन दिए हैं, वहीं उनका दुरुपयोग करके मनुष्य अपने लिए बहुत सारी समस्याएँ भी पैदा कर रहा है। विज्ञान ने हमें मोबाइल एक अच्छी वस्तु दी। इससे हमारा कम्युनिकेशन सरल हो गया। परंतु अनेक लोग इसका दुरुपयोग भी करने लगे। इन चीज़ों का यदि सदुपयोग किया जाता है तो ये वरदान बन जाते हैं, अन्यथा श्राप साबित होते हैं।

आजकल बच्चों में वासनाओं का अति प्रकोप है। इसलिये वे बॉयफ्रेन्ड-गर्लफ्रेन्ड बहुत बनाते हैं और अपने चरित्र से विमुख हो जाते हैं। इसका प्रभाव उनकी एकाग्रता पर पड़ता है। उनका मन विचलित रहने लगता है और वे अपनी पढ़ाई में असफल होने लगते हैं। इसकी कीमत उन्हें बड़ी भारी चुकानी पड़ती है और माँ-बाप के लिये भी एक बड़ी समस्या बन जाती है। हम सभी कलयुग के अंत में जी रहे हैं। ये उसी का तामसिक प्रभाव है।

आप अपनी बच्ची को अच्छे वायब्रेशन्स द्वारा परिवर्तित करने का अभ्यास करें। भोजन बनाते हुए उसमें पवित्र वायब्रेशन्स भरें और संकल्प करें कि इस पवित्र भोजन को खाने से इस बच्ची का चित्त शुद्ध हो जाए। भोजन में पवित्र वायब्रेशन्स भरने के लिए भोजन बनाते समय 100 बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। एक समय फिक्स करके आधा घण्टा उस आत्मा को योगदान दें तो धीरे-धीरे उसके व्यवहार और संस्कार में परिवर्तन आता जाएगा।

प्रश्न: मैं 40 वर्षीय पुरुष हूँ। मैंने पिछले मास अपना चेक-अप करवाया तो एच.आई.वी. पॉज़ीटिव पाया गया। मैं इससे मानसिक रूप से परेशान हो गया हूँ। जिन-जिन को पता चला, वो भी मुझे थोड़ी टेढ़ी नज़र से देखने लगे हैं। मेरी दवाई तो चालू है, परंतु मैंने सुना है कि राजयोग भी बीमारियों में बहुत मदद करता है। मुझे ऐसी कोई विधि बताइये, जिससे मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊँ?

उत्तर: आपको मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ रहना है तो जितना अधिक हो सके ये अभ्यास करना है कि मैं आत्मा परम पवित्र हूँ...भृकुटि की कुटिया में हूँ...मुझसे पवित्रता की सफेद किरणें निकलकर मेरे मस्तिष्क और पूरे शरीर में फैल रही है...एक मिनट तक ऐसा अभ्यास करना और कई बार करना। कम से कम 5 बार सारे दिन में अवश्य करना।

निश्चित रूप से ये बीमारी ऐसी ही है कि मनुष्य को स्वयं में भी शर्म आती है और दूसरों की दृष्टि भी बदल जाती है। आप अच्छे स्वमान का अभ्यास करना जैसे मैं विजयी रत्न हूँ, मैं महान आत्मा हूँ, मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ। इसके साथ-साथ लोगों की बातों को ज़्यादा भाव ना देना। आपको अपनी अच्छी स्थिति से संसार को ये दिखाना है कि हम बीमारियों में भी सहज भाव से जीवन जी सकते हैं। जितना आप स्वमान में रहेंगे, उतने सभी के सम्मान के पात्र बनते जाएंगे और आपके स्वमान के वायब्रेशन्स आपको भी स्ट्रांग बना देंगे। सदा मस्त रहो। ये याद रखना कि मैंने तो अपना शरीर-जाया प्रभु-अर्पित कर दिया है। अब वो इसे जैसे चाहे चलाये। साथ ही साथ जब भी पानी पियो, उसे 7 बार इस स्वमान से चार्ज करके ही पीना कि मैं परम पवित्र हूँ। निश्चित रूप से आपकी ये बीमारी ठीक हो जाएगी। इसके अलावा एक घण्टा योग प्रतिदिन इस बीमारी के लिए करना। तो योगबल से वो विकर्म नष्ट हो जाएगा जिसके कारण ये बीमारी हुई है और आप सम्पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगे। हमारी ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

प्रश्न: आजकल संसार में व्यक्ति पूजा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। कई लोग भवनाओं के कारण इसे बहुत ज़्यादा पसंद करते हैं। परंतु कई लोग इसका विरोध भी करते हैं। देहधारी कई देवता भी भारत में हुए हैं। उनकी भी भारत में पूजा होती है, परंतु देहधारी महान आत्माओं की पूजा करना कहाँ तक यथार्थ है? क्या हमें देहधारियों की पूजा करनी चाहिए या अव्यभिचारी रूप से केवल एक परमात्मा को ही याद करना चाहिए?

उत्तर: सर्वश्रेष्ठ भक्ति तो वही है जिसमें एक भक्त अति प्यार और श्रद्धा से एक परमात्मा को ही याद करे। दूसरे नंबर की भक्ति है देवी-देवताओं की। उनका गायन पूजन भी यथार्थ है क्योंकि उनकी आत्मा भी पवित्र है और देह भी। परन्तु इसके अलावा जो भी पूजा-पाठ और भक्ति की जाती है, वो तीसरे नंबर पर आती है।

जो भी गुरु आदि और महान पुरुष हैं, यद्यपि वे वंदनीय हैं परंतु उनका शरीर तो विषय-वासनाओं से ही बना है। भले ही वे ब्रह्मचर्य का पालन भी करते हों परंतु उनके देह को पावन नहीं कहा जा सकता। और जिसकी देह व आत्मा दोनों पावन ना हो, उनकी पूजा करने से क्षणिक भावनाएँ तो पूर्ण हो सकती हैं लेकिन सर्वोच्च लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता।

आज लोग अपने गुरुओं की भी बहुत पूजा करते हैं। इससे उनकी छोटी-मोटी इच्छाएँ तो पूर्ण हो जाती हैं लेकिन वो परमात्मा से दूर जाते रहते हैं क्योंकि उनका योग परमात्मा से नहीं, अपने गुरु में रहता है जबकि परमात्मा की याद के बिना किसी का भी कल्याण होगा नहीं। देहधारी महान पुरुषों में भावना होना तो अच्छी बात है, परंतु परमात्मा को भूलकर उन्हें ही सबकुछ मान लेना, ये यथार्थ नहीं है। अत: आत्म-कल्याण के लिए एक परमपिता से ही बुद्धि लगानी चाहिए, जिन्हें याद करके ये महापुरुष भी महान बने, जिन्हें याद करके देवताओं ने भी देवत्व प्राप्त किया। हमें भी उनके ही याद में मग्न होना चाहिए।

प्रश्न: बाबा कहते हैं कि मन के द्वारा सबको वायब्रेशन्स दो, वाचा द्वारा ज्ञान दान करो और कर्मणा के द्वारा गुणों का दान करो। ये तीनों कार्य साथ-साथ करो। इसकी सहज विधि क्या है?

उत्तर: सारे दिन यदि हमारे मन में श्रेष्ठ विचार होंगे तो सारे दिन हमारे चारो ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलते रहेंगे। जितना सारा दिन हम योगयुक्त रहेंगे तो हमसे चारो ओर लाइट और माइट फैलती रहेगी क्योंकि योगी आत्माएं चलते-फिरते लाइट हाउस हैं। इसी कर्मक्षेत्र पर रहते हुए हम स्वमान का अभ्यास करेंगे तो उसी तरह के वायब्रेशन्स चारो और फैलते जायेंगे और जब भी कोई व्यक्ति हमें मिले तो हम उसे ज्ञान दें, उसे सच्ची राह दिखायें। इस भावना के साथ कि इसका भी प्रभु-मिलन हो जाए। लेकिन ज्ञान बहुत विस्तार से नहीं, सार में देना चाहिए।

कर्म करते हुए यदि हम सरलचित्त होंगे, यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान होगी, कर्म करते भी हम यदि शांत स्वभाव को कायम रखेंगे, कर्म में ऊपर-नीचे होने पर हम तनावग्रस्त नहीं होंगे, यदि कर्मक्षेत्र पर हम बहुत सहनशील बनकर रहेंगे, हमारी वाणी में मधुरता होगी, हम क्रोध और अहंकार से मुक्त होंगे तो लोग हमसे अनेक गुण सीखते रहेंगे। ये होगा कर्म द्वारा गुणों का दान। तो ये सब कर्म आप सारे दिन में करते रहें। इन तीनों सेवाओं से अत्यधिक पुण्य का बल मिलता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

ईश्वरीय सेवा के साथी दादी मनोहर इन्द्रा,गंगे दादी,रतनमोहिनीदादी,हृदयमोहिनी दादी,जानकी दादी,दादी प्रकाशमणि,दादी निर्मलशांता,दादी चंद्रमणि।

अपनी नेचर को बच्चों की नेचर के साथ मिलाएं

प्रश्न:- सच में अगर हम देखें या अनुभव करें कि मुझे जब काम करवाना पड़ता है तो कैसा लगता है। ऐज ए मदर आलसो और अगर मैं बॉस के रूप में सोचूं। मतलब कि वो करवाना भी बड़ा मुश्किल होता है। जो रोज तय किये हुए हैं अगर हम सबकी इच्छाओं का सम्मान करके बनाये गये हैं तो उसके लिए हमें इन फोर्स नहीं करना पड़ेगा।

उत्तर:- वो नैचुरल हो जायेगा। हम घर से प्रारम्भ करते हैं, ऑफिस को अगले स्टेप में देखते हैं। लेकिन अगर हम घर में हरेक की राय लेकर ये कोशिश करना शुरू करें तो सबकी यही फीलिंग होगी कि हम सभी मिलकर बना रहे हैं। तो आपको कभी ये चेक नहीं करना पड़ेगा कि जो नियम बनाए गये हैं उसका पालन हो रहा है या नहीं हो रहा है क्योंकि वो नियम बच्चे ने खुद बनाया है। वो नियम अब सिर्फ आपके लिए लागू नहीं हो रहा है। वो इसलिए पालन कर रहा है क्योंकि उसने खुद बनाया है। देखो जब पटाखें, सरकार ने कहा कि अच्छा नहीं है, प्लास्टिक दिल्ली की सरकार ने कहा कि अच्छा नहीं है, हमारे से ज्यादा अच्छे तो वो बच्चें उसको पालन कर रहे हैं, क्यों? क्योंकि स्कूल में उनको वो समझाया गया, उससे हमें क्या-क्या हानि होती हैं और चिल्ड्रेन आर वेरी गुड, क्योंकि वे इसके महत्व को अच्छी तरह से समझते हैं। हर कोई इसे पसंद करता है कि मुझे अच्छा समझाया गया फिर मुझे इसके बारे में बताया गया। आपको क्या लगता है? अगर आप घर में बोल देते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाये पटाखें नहीं चलाने हैं, कोई नहीं मानेगा बच्चा अपने दोस्तों के साथ जाकर छुपकर चलायेगा।

प्रश्न:- सबसे ज्यादा तो स्कूल में चलाते हैं फिर घरों में छुप-छुपकर चलाते हैं।

उत्तर:- ठीक है। जहां उसको सही और गलत समझने की अवेयरनेस लायी गई है फिर उनको बताया गया कि आपको क्या लगता है, हमें क्या करना चाहिए? निर्णय बच्चों को लेने दीजिए। आप एक छोटे बच्चे से भी जो दो साल, तीन साल या चार साल के बच्चें से भी उसके स्तर की बात करेंगे ना तब बच्चा समझता है कि सही और गलत क्या है। अगर बच्चा कुछ गलत कर भी रहा है, अगर उसको हम कहें कि ये नहीं करना है। वह इसे पसंद नहीं करता है। वह फिर भी करेगा क्योंकि अभी तक उसने स्वीकार नहीं किया है कि इसे क्यों नहीं करना है। आप बार-बार बोलो नहीं करना है...नहीं करना है, फिर भी वह बार-बार उसी काम को करेगा। फिर आप कितना बोलेंगे और आज का वातावरण ऐसे ही हो गया है कि फिर हमें बच्चों पर बहुत ज्यादा ध्यान रखना पड़ता है। ठीक है, घर पर आपने कोई चीज जबरदस्ती बोल दी कि ये मत पढ़ो, ये मत देखो, इन लोगों से ऐसी बात मत करो। हमलोग कहते हैं आजकल बहुत कुछ हो रहा है सोसायटी में, बाहर जाने के बाद आप क्या करेंगे? क्या उसे चेक करेंगे? वो बच्चा कम्प्यूटर पर बैठा है, आप क्या हर समय उसे देखते रहेंगे। आप कितना समय खड़े रहेंगे चेक करने के लिए कि वो क्या देख रहा है, क्या नहीं देख रहा है। आप जितना इस तरह से उसे जबरदस्ती नियम में बांधेंगे तो उनके अंदर और भी ज्यादा आयेगा कि हमें वो करना ही है। लेकिन समझदारी के साथ, अवेयरनेस के साथ, गंभीरता के साथ उसके साथ बात करेंगे तो उसे आप सशक्त करेंगे। फिर वो खुद को अपने 'कोड ऑफ कॉन्डक्ट' में डालेंगे। एक है मैं आपका 'कोड ऑफ कॉन्डक्ट' का पालन करूं और एक है आपका 'कोड ऑफ कॉन्डक्ट' मेरे 'कोड ऑफ कॉन्डक्ट' की लिस्ट में आ जायें। तो फिर उसे पालन करना आसान हो जायेगा।

ब्र.कु. शिवानी

प्रश्न:- और सबसे बड़ी बात है, वो उसका हुआ ना, तो मेरी उससे अपेक्षा यहां पर खत्म हो जाती है।

उत्तर:- कितनी सारी चीज हो गयी। एक तो मैंने आपके 'कोड ऑफ कॉन्डक्ट' को समझा, उसे अपनाया। एक बार मैंने अपनाया, मैंने अपने लिए उसको किया, क्यों? क्योंकि मुझे करना अच्छा लगता है। और दूसरा अगर मैं किसी कारण से नहीं भी कर पायी तो आप दु:खी नहीं होंगे। क्योंकि मैं आपके लिए नहीं कर रही थी। मैं इसे अपने लिए कर रही थी। पति-पत्नी का, माता-पिता का, बच्चों का, यह बहुत ज्यादा दबाव है। आज बच्चे बहुत ज्यादा दबाव के अंदर हैं कि हमें पैरेंटस के लिए यह सब कुछ करना पड़ता है। जब हम अपनी अपेक्षा की लिस्ट बनाते हैं तो उसमें भी हमारी अपेक्षा यही होती है कि मैं स्वयं ही सारा काम खत्म कर लूं। क्योंकि मैं बच्चों के सामने अच्छा बनना चाहता हूँ। जब भी हम अपनी अपेक्षाओं की लिस्ट बनायें तो हमारी पहली अपेक्षा जो अपने आपसे होनी चाहिए वो है 'खुशी'। ये सारी जो अपेक्षाओं की लिस्ट है आप ऐसा करो, आप ऐसा बोलो, मौसम ठीक रहे, ट्रैफिक ज्यादा नहीं हो, ये किसलिए है सारा कुछ, क्योंकि ये सब चीजें जब होंगी तब मेरा मन कैसा रहेगा? 'शांत' रहेगा। जब इनमें से कोई भी चीज डिस्टर्ब होती है तब मेरा मन अशांत हो जाता है। -क्रमश

एज्युकेशन विंग

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के एज्युकेशन विंग द्वारा 14 से 18 नवम्बर- 2014 , तक 'टाइम टू रिसीव गॉड्स पावर फोर ग्रेट ट्रान्सफोर्मेशन' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय महासमेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्क्रेन्स में मुख्य वी.आई.पीज़ जैसे गवर्नर्स, मिनिस्टर्स, जजेज़, एम.पीज़, एम.एल.एज़, मेयर, काउण्सलर्स, आई.ए.एस., आई.पी.एस., रिलिजियस लीडर्स, टॉप इंडस्ट्रियलिस्ट्स, स्पोर्ट्स पर्सन, फिल्म एंड टी.वी.स्टार तथा संबंधित गणमान्य व्यक्ति भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें। ब्र.कु. मृत्युंजय,एक्ज़ीक्युटीव सेक्रेटरी।

फोन : 9414152358 , Email: bkiccf@gmail.com

समाज सेवा प्रभाग

27 फरवरी से 3 मार्च 2015 तक शान्तिवन में एक अखिल भारतीय समाज सेवा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमें समाज सेवा से जुड़े हुए समाजसेवी संगठन जैसे कि रोटरी, लायन्स, जेसी, जेंटस क्लब, विभिन्न सामाजिक स्वयंसेवी संगठन के पदाधिकारी डेलिगेट्स के रूप में सादर आमंत्रित हैं। अधिक जानकारी के लिए :- -09414153737, E-mail -socialwing@bkivv.org

स्पार्क विंग

ब्रह्माकुमारी संस्था के स्पार्क विंग द्वारा 'फोस्टेरिंग रिसर्च टू बिल्ड वैल्यु बेस्ड सोसायटी' विषय पर कॉन्क्रेन्स व मेडिटेशन रिट्रीट का आयोजन 12 से 16 सितम्बर-2014 तक शांतिवन परिसर में किया जा रहा है। इस कॉन्क्रेन्स में सभी रिसचर्स भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

M-9414003497, sparc@bkivv.org

आगामी कार्यक्रम

साइंटिस्ट एंड इंजीनियर्स विंग

ब्रह्माकुमारी संस्था के साइंटिस्ट एण्ड इंजीनियर्स विंग द्वारा कॉन्क्रेन्स का आयोजन 02 से 06 जनवरी -2014,तक शान्तिवन परिसर में किया जा रहा है। इस कॉन्क्रेन्स में इंजीनियर्स, साइंटिस्ट्स, मैनेजर्स, टेक्नोक्रेट्स, इंटरप्रेनर्स, एच.आर.डी. पर्सनल, संबंधित प्रोफेशनल्स, इंजीनियरिंग, पॉलिटेकनीक, मैनेजमेंट तथा साइंस कॉलेज व यूनिवर्सिटीज़ के प्रोफेसर्स भाग ले सकते हैं। साथ ही साइंटिस्ट एंड इंजीनियर्स विंग के आजीवन सदस्य भी भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- ब्र.कु. मोहन सिंघल,कॉन्क्रेन्स सेक्रेट्री एंड नेशनल कोऑर्डिनेटर।

फोन-02974-228101 से 228108

E-mail - sew.shantivan@gmail.com, bksew@bkivv.org,bkacademy@gmail.com

एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग

ब्रह्माकुमारी संस्था के एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग द्वारा कॉन्क्रेन्स का आयोजन 12 से 19 नवम्बर -2014,तक शांतिवन परिसर में किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:- ब्र.कु. हरीश,मुख्यालय संयोजक फोन - 9414154847 bkharishabu@gmail.com,

E.mail-administratorswing@bkivv.org,

मीडिया विंग

ब्रह्माकुमारी संस्था के मीडिया विंग द्वारा 'ट्वार्ड्स पॉज़ीटिव ट्रांसफोर्मेशन-रोल ऑफ मीडिया' विषय पर 19 से 23 सितम्बर -2014,तक शांतिवन परिसर में कॉन्क्रेन्स का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्क्रेन्स में प्रीन्ट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, फिल्म, पब्लिसर्स, एडीटर्स व रिपोर्टिंग स्टाफ तथा मीडिया से संबंधित प्रोफेशनल्स भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-फोन:-9414156615992875615, 8426040615,941338488,E.mail- mediawing@bkivv.org

कला-संस्कृति प्रभाग

ब्रह्माकुमारी संस्था के कला-संस्कृति प्रभाग द्वारा 'मूल्यनिष्ठ कला-संस्कृति हेतु परमात्म शक्ति की प्राप्ति का समय' विषय पर 12 से 16 सितम्बर-2014, तक मनमोहिनीवन कॉम्प्लैक्स (शान्तिवन) परिसर में सांस्कृतिक सम्मेलन एवं रजत जयन्ती समापन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में फिल्म जगत से जुड़े सभी कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार, नगर नियोजक, फैशन-डिज़ाइनर्स, हस्तकला, पॉलिटेकनीक इंस्टीच्यूट्स के प्रिंसीपल, शिक्षक तथा सम्बंधित व्यक्ति भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-ब्र.कु. कुसुम, राष्ट्रीय संयोजक,कल्चरलविंग,फोन - 09422175053

ब्र.कु. दयाल व ब्र.कु. सतीश, मुख्यालय संयोजक

फोन - 9828699737, 9414158745

E.mail - artandculturewing@gmail.com

डब्ल्यु.सी.सी.पी.सी.आई.का अन्तर्राष्ट्रीय महासमेलन

डब्ल्यु.सी.सी.पी.सी.आई. द्वारा 05 से 07 सितम्बर-2014, तक शांतिवन परिसर में कैड कॉन्क्रेन्स का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्क्रेन्स में कन्सल्टेन्ट कार्डियोलॉजिस्ट (डी.एम), फिज़ीशियन (एम.डी. मेडिसिन), पेडियाट्रिशियन्स (चाइल्ड स्पेशियलिस्ट), कार्डियक सर्जन, हेड ऑफ डिपार्टमेंट एंड प्रोफेसर्स, मॉडर्न मेडिसिन प्रोफेशनल्स जो मेडिकल साइंस में आध्यात्मिकता के समावेश से सहमति रखते हैं तथा सम्बंधित व्यक्ति भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-डॉ. सतीश कुमार गुप्ता, सेक्रेट्री जेनरल,डब्ल्यु.सी.सी.पी.सी.आई.

फोन - 9785098534, 8386057753, 7568075133, 2974-228880Email - 3dhealthcare@gmail.com

भावी नई दुनिया की अग्रदूत हमारी दादी

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत एक ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व जिसने आध्यात्मिकता की मशाल लेकर जन-जन के हृदयमें परमात्म प्यार की अलख जगाई, उन्हें उन अनुभूतियों से जगाया जो वे संसारिक दुनिया में करतें रहे। स्मस्त संसार में शिवसागर के पद्चिन्हों पर चल भावी दुनिया का झंडा भवसागर में फंसे हुए लोगो के दिलों पर गाड़ा और कहा उठो ,जागो फिर न रुको क्योंकि स्वर्णिम सबेरा आने ही वाला है... ऐसा कह एक श्वेत वस्त्रधारिणी ने शांतिदूत बन शांति का परचम सारे गलोब पर लहराया,आज भी वे हम सबके मध्य अपनी उन्हीं अकांशाओं के साथ जीवंत अभिनय कर रही हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्थान है जिसकी स्थापना स्वयं निराकार परमात्मा द्वारा सन् 1936 में हुई। वर्तमान समय इस विश्व विद्यालय की 137 देशों में 8500 से भी अधिक शाखाएं हैं। संस्था का मुख्यालय राजस्थान के माउण्ट आबू में स्थित है।

अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्ति-स्वरूपा है। नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और संतुष्टता की मणि सन्तोषी देवी बन सकती है, यह अपने जीवन में उन्होंने कर दिखाया। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 130 देशों के लाखों भाई-बहनों के जीवन में अ-द्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेम, शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करूणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया।

इस महान आत्मा का धरा पर अवतरण

दिव्यता की मूर्ति अनन्य आत्मा का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध (पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। सन् 1937 में विश्व के पालनहार परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप एवं भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। 'प्रजापिता ब्रह्मा' के दिव्य नाम से आलोकित कर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्था-पना की। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा देवी 14 वर्ष की तरुण अवस्-था में इस संस्था के संस्थापक के संपर्क में आयी। उसे भी अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए, जिसमें उन्होंने ज्यो-ति-स्वरूप शिव एवं नई सतयुगी दुनिया देखी। उन्हें वर्तमान विश्व, प्रकृति के प्रकोप, अणु-शक्ति, गृह युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन होने का दृश्य भी दिखाई दिया। रमा देवी के दूरदर्शी एवं भविष्य वक्ता लौकिक पिता को अपनी पुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप यही रमा देवी आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति पर प्रका-शमणि कहलाईं।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आप को प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्व -शेष पेज-4 पर..

संयक्त राष्ट्रसंघ के जनरल सेक्रेटरी डॉ परवेज द कुलर दादी प्रकाशमणि को पीस मेडल देकर सम्मानित करते हुए।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । **विदेश** - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएवल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Aug 2014
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।